केरल पाठावली

हिंदी

Kerala Reader

Hindi

कक्षा IX

Standard - 9

केरल सरकार
सार्वजनिक शिक्षा विभाग

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
केरल, तिरुवनंतपुरम

2024

ST-261-1-HINDI-9-VOL-1

राष्ट्रगान

जनगण-मन अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब-सिंध-गुजरात-मराठा,
द्राविड़-उत्कल-बंगा
विंध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा,
उच्छल जलधि तरंगा,
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे,
गाहे तव जय-गाथा
जनगण-मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे
जय जय जय, जय हे।

प्रतिज्ञा

भारत हमारा देश है। हम सब भारतवासी भाई-बहन हैं। हमें अपना देश प्राणों से भी प्यारा है। इसकी समृद्धि और विविध संस्कृति पर हमें गर्व है। हम इसके सुयोग्य अधिकारी बनने का प्रयत्न सदा करते रहेंगे। हम अपने माता-पिता, शिक्षकों और गुरुजनों का आदर करेंगे और सबके साथ शिष्टता का व्यवहार करेंगे। हम अपने देश और देशवासियों के प्रति वफ़ादार रहने की प्रतिज्ञा करते हैं। उनके कल्याण और समृद्धि में ही हमारा सुख निहित है।

Prepared by:
State Council of Educational Research and Training (SCERT)
Poojappura, Thiruvananthapuram 695012, Kerala
Website: www.scertkerala.gov.in
e-mail: scertkerala@gmail.com
Phone: 0471-2341883
First Edition : 2024
Printed at: KBPS, Kakkanad, Kochi-30
© Department of General Education, Government of Kerala

प्रिय छात्रो,

समय की ज़रूरत के अनुकूल समाज के गुणात्मक परिवर्तन को लक्ष्य में रखकर केरल राज्य में शिक्षा के नवीकरण का कार्य चलता आ रहा है। यह नवीकरण छात्रों के मानसिक तथा बौद्धिक स्तर को ध्यान में रखकर ही किया जा रहा है। इस नवीकरण के दौरान नवीं कक्षा की हिंदी पाठ्यपुस्तक प्रकाशित की जा रही है। संसार और समाज को देखने-परखने के छात्रों के दृष्टिकोण को सकारात्मक गति देने में यह सहायक रहेगी। इसकी विभिन्न विधाओं से गुज़रें, विभिन्न गतिविधियों से अपने ज्ञान का विस्तार करें और अपनी क्षमता को बढ़ावा दें। आशा है कि यह पुस्तक इन लक्ष्यों की पूर्ति में सहायक रहेगी।

डॉ. जयप्रकाश. आर. के
निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं
प्रशिक्षण परिषद्, केरल

TEXTBOOK DEVELOPMENT TEAM
Hindi - IX

ADVISOR

Prof. (Dr.) S.R. Jayasree — Professor & Head, Department of Hindi, University of Kerala, Thiruvananthapuram

CHAIRPERSON

Dr. B. Asok — Professor & Head, Department of Hindi, University College, Thiruvananthapuram

EXPERTS

Dr. John Panicker. V — Asst Professor (Rtd.), St. Gregorious College, Kottarakkara

Dr. P. Ravi — Professor & Head (Rtd.), Dept. of Hindi, SSUS Kalady

MEMBERS

Dr. Mohamed Ashraf Alungal — Cheif Instructor (Rtd.), Govt. Reagional Institute of Language Training, Thiruvananthapuram

Dr. Nanda Kumar. C — Higher Secondary School Teacher (Rtd.) St. Joseph's HSS, Thiruvananthapuram

Dr. Sajeevkumar. S — Higher Secondary School Teacher Govt. Oriental HSS, Pattambi

Sreedharan Palayi — High School Teacher (Rtd.), Govt. HSS Peruvallur, Malappuram

V.K. Aboobacker — High School Teacher, SIHSS Ummathur, Kozhikkode

Sreela S Nair — High School Teacher, IKTHSS Cherukulamba, Malappuram

Vineesh. C.O — High School Teacher, Govt Model HSS, Calicut University Campus

Dr. Vijaya Lekshmi. L — High School Teacher, Govt. HSS Muvattupuzha

Balakrishnan Kadirur — Art Teacher (Rtd.), Govt. HSS, Muppathadam, Aluva, Ernakulam

Suresh Kattilangadi — Art Teacher (Rtd.), Tanur, Malappuram

ACADEMIC CO-ORDINATOR

Deepa N Kumar
Research Officer, SCERT Kerala, Thiruvananthapuram

State Council of Educational Research and Training (SCERT), Kerala
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, केरल

अनुक्रमणिका

शीर्षक	विधा	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
इकाई एक - जिएँ जी भर...			
झटपट और नटखट	कहानी	रमेश उपाध्याय	7-15
बहुत दिनों के बाद	कविता	नागार्जुन	16-19
बूढ़ी काकी	शस्ति	प्रेमचंद की कहानी पर बनी गुलज़ार की फ़िल्म पर आधारित	20-24
इकाई दो - हरियाली की छाँव में			
घर	कहानी	प्रभात	25-35
फूल	कविता	रामदरश मिश्र	36-40
इकाई तीन - हम एक हैं			
जब गांधीजी की घड़ी चोरी चली गई	लेख	स्वयं प्रकाश	41-47
जन-जन का चेहरा एक	कविता	मुक्तिबोध	48-52
इकाई चार - कामयाबी की राह पर			
फुटबॉल के दिल का राजा	लेख	सोपान जोशी	53-61
घर, पेड़ और तारे की याद	लोककथा	मंगलेश डबराल	62-73
कब तक?	कविता	वंदना टेटे	74-77
इकाई पाँच - खुला आसमान			
राजा और विद्रोही	नाटक	रबींद्रनाथ ठाकुर अमर गोस्वामी	78-91
बोनज़ाई	कविता	सुधा उपाध्याय	92-94

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय**,

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता**,

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और [2][राष्ट्र की एकता

और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3-1-1977 से) "प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3-1-1977 से) "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

इकाई - 1

जिएँ जी भर...

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।

कबीर

कहानी

झटपट और नटखट

रमेश उपाध्याय

एक था झटपट, एक था नटखट। झटपट बड़ा था, नटखट छोटा। बड़ा केवल दो साल बड़ा था, छोटा केवल दो साल छोटा। दोनों स्कूल में पढ़ते थे। झटपट पाँचवीं में, नटखट तीसरी में। घर से दोनों भाई साथ-साथ स्कूल जाते और साथ-साथ ही वापस घर आते।

वे एक गाँव में रहते थे। स्कूल उनके गाँव में नहीं, दूर दूसरे गाँव में था। वहाँ तक पैदल जाना पड़ता था और पैदल ही वापस आना पड़ता था। जाते समय रास्ते में उन्हें कई चीज़ें मिलती थीं। पोखर, बरगद, खेत, बाग, नाला और नदी। वापस आने पर भी रास्ते में उन्हें कई चीज़ें मिलती थीं। नदी, नाला, बाग, खेत, बरगद और पोखर।

झटपट तेज़-तेज़ चलता था, नटखट धीरे-धीरे। झटपट बरगद तक पहुँच जाता, तब तक नटखट पोखर तक ही पहुँचा होता। झटपट बाग तक पहुँच जाता, तब तक नटखट खेत तक ही पहुँचा होता। झटपट नदी तक पहुँच जाता, तब तक नटखट नाले तक ही पहुँचा होता। माँ की हिदायत थी कि झटपट को छोटे भाई का ध्यान रखना है, नटखट को अपने साथ ही रखना है।

इसलिए झटपट को आगे निकल जाने पर पीछे मुड़कर देखना पड़ता। उन्हें नटखट को पुकारकर जल्दी चलने के लिए कहना पड़ता। बार-बार रुककर नटखट का इंतज़ार करना पड़ता। कभी स्कूल जाने के लिए देरी होती देख नटखट का हाथ पकड़कर अपने साथ दौड़ाना भी पड़ता। झटपट परेशान हो जाता और घर लौटकर माँ से शिकायत करता, "माँ, छोटा बहुत परेशान करता है।" "छोटा है न!" माँ मुसकरा देतीं, "और बड़े को तो छोटे का ध्यान रखना ही पड़ता है।"

'और बड़े को तो छोटे का ध्यान रखना ही पड़ता है।' माँ के इस कथन से आप क्या समझते हैं?

झटपट झुंझलाता, पर कुछ कह न पाता। बड़ा था। छोटे का ध्यान तो उसे रखना ही था। लेकिन उसे लगता कि नटखट कुछ ज़्यादा ही नटखट है। रास्ता चलते रुककर पोखर के पानी के अंदर की मछलियाँ और पानी के ऊपर की बतखें देखने लगता है। बरगद की ऊपर से नीचे आती जड़ें पकड़कर झूलने लगता है। खेत में घुसकर खाने की कोई चीज़ खोजने लगता है। बाग से गुज़रने पर आम या अमरूद तोड़ने लगता है। नाले को उधर से इधर और इधर से उधर छलाँग लगाकर पार करने का खेल खेलने लगता है। नदी के पुल को जल्दी से पार करने के बजाय उसकी मुंडेर से टिककर नीचे बहती नदी को निहारने लगता है।

'नटखट कुछ ज़्यादा ही नटखट है'- ऐसा क्यों कहा गया है?

एक दिन तो नटखट ने हद ही कर दी। दोनों भाई स्कूल से लौट रहे थे। नदी का पुल आया, तो नटखट पुल पर चढ़ने के बजाय नीचे उतर गया और नदी किनारे जा पहुँचा। बस्ते में पहले से बनाकर रखी हुई कागज़ की दो नावें निकालीं और एक-एक करके बहते पानी में छोड़ दीं। नावें बह चलीं, तो नटखट खुश होकर ताली बजाने लगा।

उधर पुल पर पहुँच चुके झटपट ने पीछे मुड़कर देखा, तो नटखट नहीं दिखा। झटपट घबरा गया कि नटखट कहाँ गया। ताली बजने की आवाज़ सुनकर नीचे देखा, तो नटखट नीचे नदी किनारे खड़ा दिखा। झटपट को उसपर बड़ा गुस्सा आया। ज़ोर से चिल्लाकर बोला, "अरे, छोटे! तुम वहाँ नीचे क्या कर रहे हो?" नटखट ने चौंककर ऊपर देखा और नदी किनारे रखा अपना बस्ता उठाने के लिए झुका। अचानक उसका पाँव फिसला और वह पानी में गिर पड़ा। पानी का बहाव तेज़ था और नटखट को तैरना नहीं आता था। छोटा-सा ही तो था। बह गया। डूबते-उतराते दूर जाने लगा।

झटपट को तैरना आता था। उसने झट अपना बस्ता पीठ से उतारकर पुल की मुंडेर पर रखा और नदी में कूद पड़ा। थोड़ी दूर तैरने के बाद ही उसने नटखट को पकड़ लिया और किनारे पर ले आया। झटपट को इतना गुस्सा आ रहा था कि नटखट को दो झापड़ लगाए, पर नटखट इतना डरा और घबराया हुआ था कि उसे छोटे भाई पर प्यार आ गया। उसने नटखट का हाथ पकड़े-पकड़े उसका बस्ता उठाया और पुल तक पहुँचाने वाली चढ़ाई चढ़ने लगा।

पुल पर पहुँचा ही था कि नटखट अचानक गला फाड़कर रोने लगा। झटपट ने कहा, "अब तो तुम बह जाने से बच गए हो, फिर क्यों रो रहे हो?'' नटखट ने रोते-रोते कहा, "तुम घर जाकर माँ से मेरी शिकायत करोगे।"

"अगर न करूँ, तो?" "तो जो कहो।" नटखट का रोना बंद हो गया। "मुझे कागज़ की नाव बनाना नहीं आता। तुम सिखा दोगे?'' "हाँ, उसमें क्या है!" नटखट खुश होकर बोला, ''पर मुझे तैरना नहीं आता। तुम सिखा दोगे?'' "हाँ, उसमें क्या है!" झटपट ने मुसकराते हुए नटखट के शब्दों की नकल की और दोनों भाई हँस पड़े। लेकिन झटपट ने नटखट का बस्ता उसे पकड़ाकर पुल की मुंडेर पर से अपना बस्ता उठाया, तो एकदम चिंतित होकर बोला, "अरे, छोटे, हम दोनों के कपड़े भीग गए हैं। हमें भीगे कपड़ों में देख माँ पूछेंगी, तो क्या कहेंगे?'' ''हाँ बड़े! अब?" नटखट ने एक पल सोचा और बोला, "आओ, दौड़ लगाते हैं। कपड़े अपने-आप सूख जाएँगे।" "हाँ, यह ठीक है।" झटपट ने अपना बस्ता पीठ पर टाँगते हुए कहा।

नटखट ने भी अपना बस्ता पीठ पर टांग लिया और झटपट के बराबर खड़े होकर दौड़ शुरू करने के अंदाज़ में बोला, "एक... दो... तीन!" दोनों दौड़ पड़े। आगे-पीछे नहीं, एक-दूसरे का हाथ पकड़े साथ-साथ।

कपड़े सुखाने के लिए दोनों भाइयों ने एक उपाय किया। और क्या-क्या उपाय हो सकते हैं?

सर्दियाँ अभी शुरू नहीं हुई थीं। मौसम साफ़ था। चटकीली धूप निकली हुई थी। दोनों भाई मजे में दौड़ते चले गए। नाला पार किया। बाग पार किया। खेत पार किया। बरगद को भी पीछे छोड़ दिया। लेकिन पोखर तक पहुँचते-पहुँचते दोनों थक गए और रुक गए।

"कपड़े सूख गए, छोटे!" झटपट ने हाँफते हुए लेकिन खुश होते हुए कहा। "हाँ, बड़े, वाकई! कपड़े तो सूख गए!" नटखट ने भी खुश होकर कहा।

तभी नटखट को पोखर किनारे एक चिकनी गिट्टी दिखाई पड़ी। नटखट ने उसे उठा लिया और तिरछे होकर उसे इस तरह फेंका कि गिट्टी पानी की सतह पर उछलती हुई दूर तक चली गई। देखा-देखी झटपट ने भी एक गिट्टी उठाकर फेंक दी। लेकिन उसकी गिट्टी एकदम पानी में गुडुप हो गई। "बड़े, तुमको गिट्टी पैराना नहीं आता?" "हाँ, छोटे, तुम सिखा सकते हो?"

"क्यों नहीं! अभी लो!" नटखट ने ध्यान से नीचे देखकर एक गिट्टी उठाई और झटपट को दिखाते हुए बोला, "गिट्टी ऐसी लो जो ज्यादा भारी और खुरदुरी न हो। हल्की और चिकनी हो। और उसे इस तरह फेंको..."

लेकिन अब तक झटपट का ध्यान बँट चुका था। वह पोखर के पानी पर तैरती बतखों को ध्यान से देख रहा था।

कहानी के पात्रों की विशेषताएँ पहचानें, सही मिलान करें :

नटखट	**को**	कागज़ की नाव बनाना आता है।
		नदी में तैरना आता है।
झटपट		बाग से आम तोड़ता है।
		माँ से शिकायत करता है।
		बरगद की जड़ें पकड़कर झूला झूलता है।
		छोटे का हाथ पकड़ कर दौड़ाता है।

कहानी से शब्द-जोड़े चुनें, अपने वाक्य में प्रयोग करें :

जैसे :-

- भाई और मैं **साथ-साथ** पढ़ते और **साथ-साथ** ही खेलते।

झटपट को तैरना आता है, नटखट को नाव बनाना आता है। लिखें, आपको क्या-क्या आता है?

जैसे:- • मुझे साइकिल चलाना आता है।

सही प्रस्ताव चुनकर लिखें :

- दोनों भाई अपने गाँव के स्कूल में पढ़ते हैं।
- नटखट को गिट्टी पैराना आता है।
- नटखट हमेशा रोते हुए स्कूल आता है।
- बड़ा भाई पाँचवीं कक्षा में पढ़ता है।
- झटपट को स्कूल के रास्ते में कई बार छोटे का इंतजार करना पड़ता है।

अनुभव बाँटें :

झटपट और नटखट एक दूसरे को नाव बनाना और नदी में तैरना सिखाने का वादा करते हैं। इसी प्रकार का आपका कोई अनुभव बाँटें।

पोस्टर तैयार करें :

झटपट ने नदी में कूद कर नटखट की जान बचाई। मान लें, इसपर स्कूल में बधाई समारोह हो रहा है। इसके लिए पोस्टर तैयार करें।

चर्चा करें :

मान लें, आपको तैरना नहीं आता। नटखट की जान बचाने के लिए आप क्या करते?

समझें, लिखें :

नमूने देखें; रेखांकित अंश पर ध्यान दें, अर्थभेद समझें।

झटपट दौड़ **लगाता है**।	झटपट दौड़ **लगा रहा है**।
झटपट और नटखट दौड़ **लगाते हैं**।	झटपट और नटखट दौड़ **लगा रहे हैं**।
मछली **तैरती है**।	मछली **तैर रही है**।
नदियाँ **बहती हैं**।	नदियाँ **बह रही हैं**।

नमूने के अनुसार वाक्य बदलकर लिखें :

नटखट रोता है।	.....
.....	झटपट और नटखट स्कूल से आ रहे हैं।
.....	नाव चल रही है।
सर्दियाँ शुरू होती हैं।	.....

बातचीत लिखें :

मान लें, नटखट ने घर पहुँचकर रास्ते की सारी घटनाएँ माँ को बता दीं। दोनों के बीच की बातचीत लिखें।

ऑडियो बनाएँ :

अब इस कहानी का ऑडियो तैयार करें।

रमेश उपाध्याय

जन्म : 1 मार्च 1942
मृत्यु : 24 अप्रैल 2021

रमेश उपाध्याय का जन्म उत्तर प्रदेश में हुआ। वे कहानी, उपन्यास, नाटक, नुक्कड़ नाटक, आलोचना आदि विधाओं में सक्रिय रहे। दंड द्वीप, हरे फूल की खुशबू, शेष इतिहास आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। वे गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार से सम्मानित हैं।

मदद लें...

पोखर - तालाब
बरगद - वटवृक्ष
बाग - बगीचा
नाला - छोटा जल प्रवाह
हिदायत - നിർദ്ദേശം, instruction, ನಿರ್ದೇಶ, பரிந்துரை
इंतज़ार करना - प्रतीक्षा करना
देरी - विलंब
परेशान - व्याकुल
शिकायत - പരാതി, complaint, ದೂರು, புகார்
झुंझलाना - क्रोध एवं व्यथा से बोलना
बतख - താറാവ്, duck, ಬಾತುಕೋಳಿ, வாத்து
जड़ - വേര്, root, ಬೇರು, வேர்
झूलना - ആടുക, to swing, ಉಯ್ಯಾ ಲೆಯಾಡು, ஆடுதல்
घुसना - प्रवेश करना
छलांग मारना - കുതിച്ചു ചാടുക, to leap, ಜಿಗಿಯು, குதித்தல்
पुल - പാലം, bridge, ಸೇತುವೆ, பாலம்
मुंडेर - മുണ്ടേര, കൈവരി, railing, ಕೈಹಿ ಡಿ, கைப்பிடி
टिकना - ठहरना
निहारना - गौर से देखना

हद कर देना - പരിധി ലംഘിക്കുക, to cross the limit, ಸೀಮೆಯನ್ನು ಉಲ್ಲಂಘಿಸು, **எல்லை மீறுதல்**

बस्ता - पुस्तक रखने की थैली, school bag, ಚೀಲ, **புத்தகப்பை**

कागज़ की नाव - കടലാസ് തോണി, paper boat, ಕಾಗದದ ದೋಣಿ, **காகிதப்படகு**

ताली बजाना - കൈയ്യടിക്കുക, to clap, ಚಪಾಳೆ ತಟ್ಟು, **கை ட்டுதல்**

घबराना - പരിഭ്രമിക്കുക, to panic, ಗಾಬರಿಯಾಗು, **நடுக்கம்**

गुस्सा - कोप

चौंकना - चकित होना

अचानक - सहसा

पाँव फिसलना - पैर फिसलना

बहाव - प्रवाह

झट - तुरंत

नकल करना - अनुकरण करना

दौड़ लगाना - तेज़ी से भागना

टाँगना - लटकाना

अंदाज़ - हावभाव

मौसम - കാലം, season, ಕಾಲ, **பருவகாலம்**

चटकीली - चमकीली

धूप - വെയിൽ, sunlight, ಬಿಸಿಲು, **வெயில்**

सूखना - ഉണങ്ങുക, to become dry, ಒಣಗುವುದು, **உலர்தல்**

हाँफना - കിതയ്ക്കുക, to pant, ಏದುಸಿರುಬಿಡು, **மூச்சு வாங்குதல்**

वाकई - वास्तव में

तिरछे होकर - വളഞ്ഞ്, bent over, ಬಾಗಿಕೊಂಡು, **வளைந்த**

गिट्टी - पत्थर का छोटा टुकड़ा

गुड्डप हो जाना - अप्रत्यक्ष हो जाना

गिट्टी पैराना - पानी में पत्थर उछालना

भारी - ഭാരമുള്ള, heavy, ಭಾರವಿರುವ, **சுமை**

खुरदुरी - പരുപരുത്ത, rough, ದೊರಗಾದ, **கரடுமுரடான**

ध्यान बंटना - ध्यान हट जाना

कविता

बहुत दिनों के बाद

नागार्जुन

बहुत दिनों के बाद
अबकी मैंने जी भर देखी
पकी-सुनहली फ़सलों की मुसकान
—बहुत दिनों के बाद

'फ़सलों की मुसकान' -से क्या तात्पर्य है?

बहुत दिनों के बाद
अबकी मैं जी भर सुन पाया
धान कूटती किशोरियों की कोकिलकंठी तान
—बहुत दिनों के बाद

'धान कूटती किशोरियों की कोकिलकंठी तान' - इससे आपने क्या समझा?

बहुत दिनों के बाद
अबकी मैंने जी भर सूँघे
मौलसिरी के ढेर-ढेर से ताज़े-टटके फूल
—बहुत दिनों के बाद

बहुत दिनों के बाद
अबकी मैं जी भर छू पाया
अपनी गँवई पगडंडी की चंदनवर्णी धूल
—बहुत दिनों के बाद

'गँवई पगडंडी की चंदनवर्णी धूल' -यहाँ गाँव का कौन-सा चित्र प्रकट होता है?

बहुत दिनों के बाद
अबकी मैंने जी भर तालमखाना खाया
गन्ने चूसे जी भर
—बहुत दिनों के बाद

बहुत दिनों के बाद
अबकी मैंने जी भर भोगे
गंध-रूप-रस-शब्द-स्पर्श सब साथ-साथ इस भू पर
—बहुत दिनों के बाद

चर्चा करें :

अबकी मैंने ***जी भर*** देखी
अबकी मैं ***जी भर*** सुन पाया

कविता में 'जी भर' शब्द का प्रयोग बार-बार हुआ है। इसकी विशेषता पर चर्चा करें।

कवि ने कविता में कई विशेष अर्थवाली पंक्तियों का प्रयोग किया है। ऐसी पंक्तियाँ पहचानकर लिखें :

जैसे,

- किशोरियों की कोकिलकंठी तान
- .....
- .....
- .....
- .....

समान आशयवाली पंक्तियाँ कविता से चुनकर लिखें :

- खेत स्वर्णवर्णी फ़सलों से समृद्ध है।
- ग्रामीण बालाएँ मेहनत करते हुए मधुर गीत गाती हैं।
- तन-मन को ऊर्जा देनेवाली खुशबू फैल जाती है।
- गाँव की गलियों की सुनहली धूलि का एहसास हुआ।
- मनपसंद देहाती खाना चखने का मौका मिला।

कविता से इन पदों की विशेषता सूचित करनेवाले शब्द पहचानकर लिखें :

- फ़सल
- तान
- फूल
- धूल

कविता का आशय लिखें :

कविता-संकलन करें :

प्रकृति प्रेम का चित्रण करनेवाली अनेक कविताएँ हैं। ऐसी कविताओं का संकलन करें और कक्षा में प्रस्तुत करें।

नागार्जुन

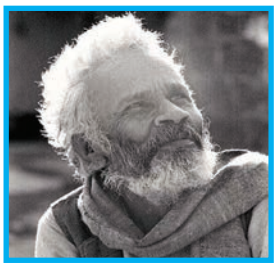

जन्म : 30 जून 1911
मृत्यु : 05 नवंबर 1998

हिंदी के प्रगतिशील साहित्यकार नागार्जुन का जन्म बिहार के दरभंगा में हुआ। उनका मूल नाम वैद्यनाथ मिश्र है। उन्होंने मैथिली, बंगला तथा संस्कृत में भी रचनाएँ की हैं। सतरंगे पंखोंवाली, रतिनाथ की चाची, बलचनमा, वरुण के बेटे आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। भारत भारती सम्मान, साहित्य अकादमी पुरस्कार आदि से वे विभूषित हैं।

मदद लें...

जी - मन

पकी - വിളഞ്ഞു നിൽക്കുന്ന, ripe, ಬೆಳೆದು ನಿಂತಿರುವ, விளைந்து நிற்கும்

सुनहला - सोने के रंग का

फ़सल - खेती की उपज

धान कूटना - നെല്ല് കുത്തുക, to husk the rice, ಭತ್ತಕುಟ್ಟುವುದು, நெல்குற்றுதல்

किशोरी - कुँआरी

कोकिलकंठी - सुरीली आवाज़ वाली

तान - നാദം, tone, ನಾದ, நாதம்

सूँघना - सुगंध लेना

मौलसिरी - ഇലഞ്ഞി, Spanish Cherry, ಬಕುಳದ ಹೂವು(ರೆಂಜದ ಹೂವು), இலஞ்சி/மகிழமரம்

ताज़े-टटके - പുതുപുത്തനായ, fresh, ತಾಜಾ, புதிய

गँवई - ग्रामीण

पगडंडी - ഒറ്റയടിപ്പാത, trail, ಕಾಲುದಾರಿ, ஒற்றை அடிப்பாதை

तालमखाना - एक औषधीय पौधा

गन्ना - ഈഖ, കരിമ്പ്, sugar cane, ಕಬ್ಬು, கரும்பு

चूसना - होंठों से रस खींचना

भोगना - अनुभव करना

भू - धरती

शस्ति / ब्लर्ब

बूढ़ी काकी

मूल कहानी : प्रेमचंद

निर्देशक : गुलज़ार

आधुनिक हिंदी साहित्य के कालजयी कथाकार प्रेमचंद की एक मार्मिक कहानी है 'बूढ़ी काकी'। मानवीय करुणा की भावना से ओतप्रोत इस कहानी में बुढ़ापे की समस्या को प्रस्तुत किया गया है। वृद्धजनों की जायदाद-संपत्ति लेने के बाद उनकी उपेक्षा करनेवाले सामाजिक यथार्थ की ओर कहानी इशारा करती है। बूढ़ी काकी को विधवा हुए पाँच वर्ष हो चुके हैं। उसके जवान बेटे की भी अकाल मृत्यु हुई। इस संसार में बूढ़ी को अपना कहनेवाला कोई नहीं। काकी अपनी सारी संपत्ति भतीजे के नाम करवाकर उसके साथ रहती थी। इनसान के लालच की कोई सीमा नहीं होती... बुद्धिराम और रूपा अपनी काकी के प्रति तब तक बहुत अच्छे रहते हैं जब तक कि वह उन्हें अपनी सारी संपत्ति उपहार में नहीं दे देती। वे लोग बात-बात पर बूढ़ी काकी का अपमान और तिरस्कार करते थे। भरपेट भोजन से भी वह वंचित थी। जो रिश्ते ढीली बुनियाद पर टिके होते हैं, वे रिश्ते ही खत्म हो जाते हैं। छोटी लड़की लाड़ली, परिवार में एकमात्र ऐसी है जो उस गरीब आत्मा की देखभाल करती है। मुंशी प्रेमचंद की अविस्मरणीय कहानी पर गुलज़ार की संवेदनशील और मार्मिक लघु फ़िल्म...

फ़िल्म देखें, मुख्य घटनाओं को सूचीबद्ध करें :

- .....
- .....
- .....
- .....
- .....

- लिखें, फ़िल्म के मुख्य पात्र कौन-कौन हैं?
- बताएँ, यह फ़िल्म किस समस्या की ओर संकेत करती है?

इसपर ध्यान दें :

शस्ति अथवा ब्लर्ब क्या है?

ब्लर्ब किसी पुस्तक, सिनेमा या अन्य सृजनकार्य के प्रचार के लिए लिखे जाने वाले प्रेरक सारांश है। ब्लर्ब में किताब या फ़िल्म से संबंधित महत्वपूर्ण बातों को ही शामिल किया जाता है। इसमें रचना और रचनाकार से संबंधित संक्षिप्त विवरण शामिल होगा। किसी लोकप्रिय पात्र हो तो उसका भी ज़िक्र करना अच्छा होगा। ब्लर्ब आम तौर पर किताब या प्रचरण सामग्री के पिछले आवरण पृष्ठ पर छपा जाता है। ब्लर्ब के छापने का मुख्य उद्देश्य रचना की तरफ़ पाठक या दर्शक को आकर्षित करना है। ब्लर्ब पढ़ते ही पाठक या दर्शक किताब पढ़ने या फ़िल्म देखने के लिए प्रेरित हो जाएँ। इस दृष्टि से देखा जाए तो ब्लर्ब स्वयं ही एक सृजनात्मक कार्य है। इसकी भाषा और प्रस्तुति की शैली अनोखी हो ताकि पढ़ते ही पाठक रचना के प्रति आकर्षित हो जाएँ।

किताब की शस्ति का यह नमूना पढ़ें :

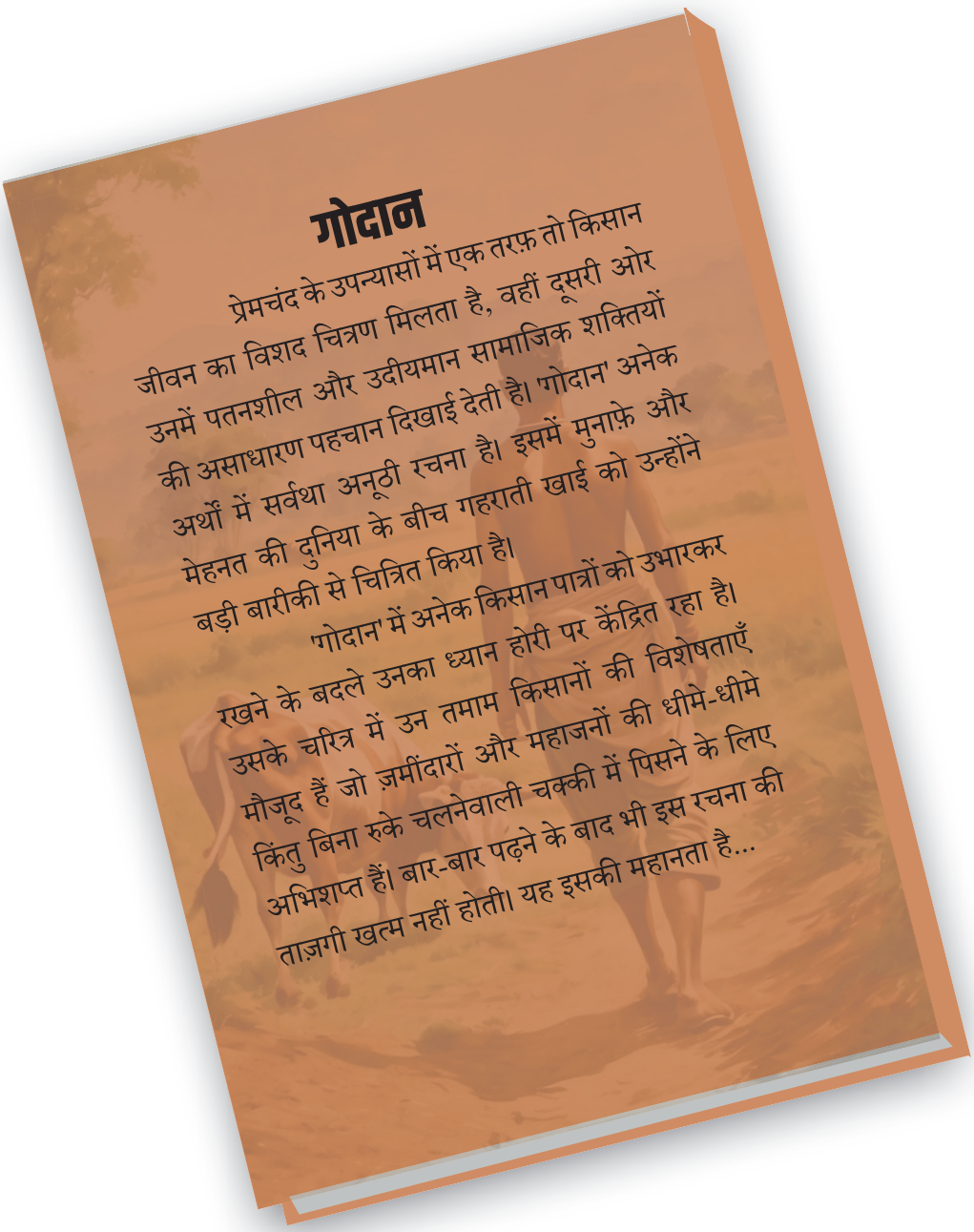

किसी मनपसंद किताब या फ़िल्म की शस्ति तैयार करें।

इकाई के पाठों से एक बार और गुज़रें, तालिका की पूर्ति करें :

वाक्य	सही	गलत
बड़ा भाई नदी में कूदकर छोटे की जान बचाता है।		
कई दिनों के बाद कवि ग्रामीण सौंदर्य का आस्वादन करते हैं।		
बुद्धिराम और रूपा हमेशा बूढ़ी काकी का आदर करते थे।		
बूढ़ी काकी के युवा पुत्र की अकाल में मृत्यु हुई।		
दो बालक कपड़े सुखाने के लिए धूप में खेलते हैं।		
अपने गाँव की हालत देखकर कवि बहुत परेशान है।		
मेहनती बालिकाओं का गाना मन में खुशी लाता है।		

प्रेमचंद

जन्म : 31 जुलाई 1880
मृत्यु : 08 अक्तूबर 1936

हिंदी के सबसे महान कथाकार हैं प्रेमचंद। उनका असली नाम धनपतराय श्रीवास्तव है। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- मानसरोवर (आठ भाग), रंगभूमि, गबन, निर्मला, गोदान आदि।

गुलज़ार

जन्म : 18 अगस्त 1934

गुलज़ार हिंदी गीतकार होने के साथ ही गज़लकार, पटकथा लेखक, फ़िल्म निर्देशक भी हैं। पद्मभूषण, ऑस्कार पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार, दादा साहब फाल्के पुरस्कार आदि से वे सम्मानित हैं।

मदद लें...

बूढ़ी	-	वृद्धा
काकी	-	चाचा/ काका की पत्नी
ओतप्रोत	-	बहुत मिला हुआ
बुढ़ापा	-	वृद्धावस्था
जवान	-	युवा
भतीजा	-	भाई का पुत्र
लालच	-	लोभ, अत्याग्रह
रिश्ता	-	संबंध
ढीली	-	हल्की
बुनियाद	-	अस्तित्व
खत्म होना	-	समाप्त होना
लाड़ली	-	प्यारी
देखभाल करना	-	संरक्षण करना
संवेदनशील	-	सहानुभूतिपूर्ण

इकाई मुखपृष्ठ के कवि

कबीर

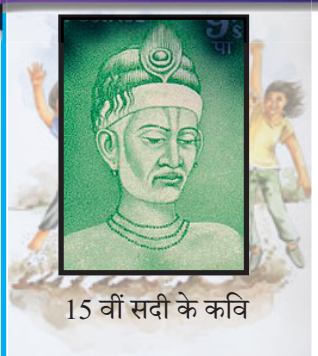

15 वीं सदी के कवि

कबीर 15वीं सदी के संत कवि थे। वे हिंदी साहित्य के भक्ति काल की निर्गुण शाखा के कवि थे। उन्होंने समाज में फैली कुरीतियों और अंधविश्वासों की निंदा की और सामाजिक बुराइयों की कड़ी आलोचना की। ऐसा माना जाता है कि कबीर की वाणी का संग्रह उनका शिष्य धर्मदास ने बीजक के नाम से सन् 1464 में किया। इसके तीन भाग हैं– साखी, सबद और रमैनी।

इकाई - 2

हरियाली की छाँव में

सूर्य किरणें
हँस हँस सजातीं
धरा की वेणी

पुष्पा मेहरा

कहानी

घर

प्रभात

कली जो खिलती नहीं आज खिली-खिली-सी थी।

गिरगिट ने उसे सड़क पार कर आते देखा तो मुसकराया, ''हैलो।''

''हैलो।'' छिपकली ने कहा।

''तुम यहाँ?'' गिरगिट का गला फूलकर पिचका।

'''तुम यहाँ' से क्या मतलब है तुम्हारा?'' छिपकली बोली।

यहाँ 'कली' कौन है और 'खिली-खिली' का मतलब क्या होगा?

''दीवार पर रहने वाली को सड़क पर देखकर, इतना तो पूछा ही जा सकता है।'' गिरगिट ने रंग बदलते हुए कहा।

''मैं आज घर बदल रही हूँ।'' छिपकली ने मुसकराते हुए कहा। ''तुम श्रीमान फरहाद को तो ज़रूर जानते होगे।''

''हाँ, हाँ पहले जब भी हम मिले हैं, तुमने उनका ज़िक्र किया है। क्या हुआ उन्हें?'' गिरगिट ने गिरगिटी आवाज़ में कहा।

''हुआ कुछ नहीं बुद्धू। वे जिस किराए के कमरे में रहते थे, अब नहीं रहते। उन्होंने अपना नया घर बना लिया है।''

छिपकली ने कहा।

''तो तुम्हें इससे क्या?'' गिरगिट गिरगिटियाया।

''मेरा जीना दूभर हो गया है और तुम कह रहे हो तुम्हें इससे क्या! तुम कभी रहे होते उनके साथ उस किराए के कमरे में तो कुछ समझ पाते। कितने सलीके से रहते थे हम। उनके पास किताबों की बड़ी-बड़ी अलमारियाँ थीं। वे किताबों के आगे रहते थे, मैं किताबों के पीछे। मैं कितनी ही बार उनसे कपड़ों की गली में मिली। बर्तनों की गली में मिली। दराज़ मार्केट में मिली। डस्टबिन में मिली। झाड़ू के नीचे मिली। हमेशा मुसकराए। मेरा तजुर्बा कहता है कि छिपकलियों के पीछे झाड़ू लेकर पड़े रहने वालों में से वो नहीं हैं।''

''होते हैं कुछ लोग।'' गिरगिट ने उबासी लेते हुए कहा।

''उनसे पहले मैं श्रीमती शांतिदास के साथ कुछ दिन रही थी। पूरी अशांतिदास थीं वे। मुझे देखते ही चिल्लाती थीं- ऊईईईई। घिग्गी बँध जाती थी उनकी। कहती थीं- "सुशांतो जल्दी आओ, इसे भगाओ।''

''मैं उनके साथ एक सप्ताह नहीं टिक सकी। पर कहते हैं ना जो वास्तव में भला होता है उसे भले लोग ज़रूर मिलते हैं। फलस्वरूप मेरी ज़िंदगी में श्रीमान फरहाद आ ही गए।'' कहते हुए छिपकली के चेहरे पर वैसी ही असीम शांति थी जैसी संगमरमर की मूर्तियों में होती है।

''ओह छिप्पू मैं तुम्हारा दर्द समझ सकता हूँ। कितनी दफ़ा मैं खुद ऐसे अनुभव से गुज़रा हूँ।'' गिरगिट ने कहा।

"ओह छिप्पू मैं तुम्हारा दर्द समझ सकता हूँ।" यहाँ दूसरों का दर्द समझने का मतलब क्या है?

''सो, अब मेरा इरादा श्रीमान फरहाद के घर में ही बचा-खुचा जीवन गुज़ारने का है।'' छिपकली ने एक ही वाक्य में बातचीत समाप्त करते हुए कहा।

''विचार अच्छा है।'' गिरगिट बोला।

''अच्छा है ना? वक्त मिले तो आना कभी।'' कहते हुए छिपकली आगे बढ़ गई।

''ज़रूर-ज़रूर मुझे तुमसे मिलने आना अच्छा ही लगेगा।'' हाथ हिलाते हुए गिरगिट छिपकली को जाते देखता रहा।

छिपकली नीम सराय के मकान नंबर 205 के गेट पर पहुँची। दीवार पर चढ़ी।

''सुनो।''

छिपकली ने चारों ओर नज़र घुमाकर देखा कि आवाज़ किधर से आई।

''अरे और ऊपर। इधर कोने में।''

छिपकली ने कोने में देखते हुए कहा, ''मैं तो सोचती थी नए घर में मैं ही सबसे पहले पहुँच रही हूँ। तुम कब पहुँची?

''मैंने कल ही शिफ्ट किया है।'' मकड़ी ने कहा।

''तो और कौन-कौन हैं यहाँ?'' छिपकली ने पूछा।

"दस-पंद्रह मक्खियाँ और सौ के आसपास मच्छर।'' मकड़ी ने बताया।

''हाय!'' छिपकली ने मक्खी-मच्छरों की ओर हाथ हिलाते हुए कहा।

''हाँ हूँ ही..ही।'' मक्खी-मच्छरों ने कुछ घबराई-सी हँसी हँसते हुए जवाब दिया। और वही मुहावरा दोहराया जो इनसानों में खासा प्रचलित है, ''हम जहाँ जाना चाहते हैं, हमारी बदकिस्मती हमसे पहले वहाँ पहुँच जाती है।''

छिपकली ने जाने कैसे सुन लिया। मच्छरों को सुनाते हुए मकड़ी से कहने लगी, ''कुछ लोग खुद तो लोगों का खून ही पिएँ और दूसरों से चाहें कि वे शाकाहारी रहें। वाह रे ज़माने!''

नए मकान की नई सफ़ेद झक दीवार में पुताई की पपड़ी में से सिर निकालते हुए काली चींटी ने कहा, ''आप लोग इतनी तेज़ आवाज़ में बात कर रहे हों कि मेरे बच्चे सोने के बजाय करवट बदल रहे हैं।''

''ओह! माफ़ करना।'' छिपकली ने मकड़ी की तरफ़ सवालिया आँखों से देखते हुए कहा।

''पता नहीं कब से रह रही है। मैं भी पहली बार ही देख रही हूँ।'' मकड़ी ने फुसफुसाते हुए कहा।

''चाय तैयार है। और मैं पड़ोसी होने के नाते पहली मुलाकात के मौके पर आप दोनों को एक साथ बुला रही हूँ।'' ततैया बोली।

मकड़ी और छिपकली को खिड़की के परदे के पीछे ततैया के यहाँ आकर अच्छा ही लगा।

''और कौन-कौन हैं यहाँ?'' छिपकली बोली।

''ज़्यादातर से तुम मिल ही चुकी हो। इनके अलावा एक तो चूहा है। लेकिन वो पूरे समय नहीं रहता है। आता-जाता रहता है। कभी-कभी एक, दो या तीन दिन के लिए गायब भी हो जाता है।''

''क्या काम करता है वह?''

''सुना है पत्रकार है।''

''तभी।''

''उसके अलावा कोई और?''

''नहीं और कोई भी नहीं है। चिड़ियाँ भी आती हैं वैसे दिन में लेकिन

शाम को चली जाती हैं। एक गिलहरी है, वो बाहर रहती है। अंदर रहने वाले केवल हम ही हैं।''

''और श्रीमान फरहाद?'' छिपकली ने ततैया और मकड़ी दोनों की ओर देखते हुए पूछा।

''क्या तुम उनकी बात कर रही हो जो शरीर पर से एक तरह के कपड़े उतार कर दूसरी तरह के कपड़े पहनते रहते हैं? पर वो तो केवल रात में रहने के लिए यहाँ आते हैं। उसमें भी ज़्यादातर समय सोए रहते हैं। थोड़ी देर के लिए जागते हैं तो किताब उठाकर पढ़ने लग जाते हैं। सच पूछो तो वे बहुत थोड़ी-सी जगह लेते हैं इस मकान में। हमारी तरह दीवारों, खिड़कियों या छत से उनका खास लेना-देना नहीं है।'' ततैया ने कहा।

''हमारी तरह दीवारों, खिड़कियों या छत से उनका खास लेना-देना नहीं है।'' यहाँ फरहाद के प्रति प्राणियों का कौन-सा मनोभाव प्रकट होता है?

''खास क्या, उनका तो कुछ भी लेना-देना नहीं है।'' मकड़ी को बहुत कम समय में ही यह बात समझ आ गई थी, इसलिए ज़ोर देकर बोली।

चाय के बाद अपने-अपने ठिकानों की ओर रुख करने से पहले मकड़ी, छिपकली और ततैया ने एक दूसरे को अपने-अपने पते बताए।

देर रात श्रीमान फरहाद आए। उन्होंने दो कमरे, किचन, और बरामदे वाले अपने नए मकान में हर जगह की लाइट

जलाई। खाना बनाकर खाया। पानी पिया। मच्छरदानी लगाई और लाइटें बुझाकर सो गए।

सोते ही उन्हें सपने आना शुरू हो जाता है। उनके सपने में चल रहा था कि बुखारी में रखी पुरानी मटकी के पास छिपकली ने अंडे दिए हैं। कमरों के पीछे गैलरी के कोने में मकड़ी ने बहुत बड़ा जाला तैयार कर लिया है जिसमें कुछ मक्खियाँ सुखाई हुई हैं। फरहाद उस जाले का फोटो क्लिक कर रहे हैं। वे बहुत खुश हैं कि नए घर में उनका परिवार बढ़ रहा है और सभी खुश हैं।

वे सपने देखते-देखते ही जाग जाते हैं। सुबह जागे। पलंग के नीचे रखी चप्पलों में पैर दिए तो उन्हें गुदगुदी हुई। उन्होंने देखा कि तीन नन्हीं मेंढ़कियाँ चप्पल पर एक दूसरे से सटी बैठी हैं। उन्होंने चप्पल को आहिस्ते-से उठाया। तीनों मेंढ़कियों को दूसरे हाथ की हथेली पर ले लिया। उनकी हथेली पर वे किसी तीन पंखुड़ियों वाले हरे फूल की तरह लग रही थीं। वे कुछ देर उन्हें हथेली पर लिए-लिए बाहर हवा में टहलने लगे। वे तब तक टहलते रहे जब तक कि वे तीनों एक-एक कर कूद न गईं।

जब वे घर में खेलने लगीं, वे आइने के सामने खड़े होकर मुसकराने लगे। तभी उन्हें आइने में छिपकली दिखी।

नए घर में उन दोनों की यह पहली मुलाकात थी।

लिखें, प्रकृति किन-किनका घर है :

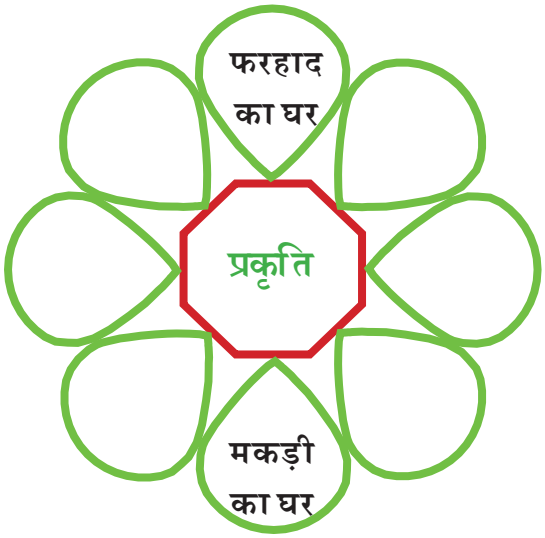

पर्यावरण से 'घर' शीर्षक का क्या संबंध है? अपना विचार लिखें :

देखें, वाक्य कैसे बनते हैं :

उन्होंने लाइट जलाई।

उन्होंने हर जगह की लाइट जलाई।

उन्होंने मकान में हर जगह की लाइट जलाई।

उन्होंने नए मकान में हर जगह की लाइट जलाई।

उन्होंने अपने नए मकान में हर जगह की लाइट जलाई।

उन्होंने दो कमरे, किचन और बरामदे वाले अपने नए मकान में हर जगह की लाइट जलाई।

उन्होंने दो कमरे, किचन और बरामदे वाले अपने नए मकान में हर जगह की लाइट जलाई।

वाक्य को आगे बढ़ाएँ :

फरहाद टहलने निकला।

.....

.....

.....

.....

.....

रेखांकित शब्दों पर ध्यान दें :

- गिरगिट ने रंग बदलते हुए कहा।
- फरहाद ने चप्पल को आहिस्ते-से उठाया।
- छिपकली ने चारों ओर नज़र घुमाकर देखा।

क्रिया के साथ रेखांकित शब्दों का संबंध पहचानें। कहानी से ऐसे वाक्य चुनकर लिखें।

• ध्यान दें, ये वाक्य किनके बारे में हैं :

- ''मेरा तजुर्बा कहता है कि छिपकलियों के पीछे झाड़ू लेकर पड़े रहनेवालों में से वो नहीं हैं।''
- ''सच पूछो तो वे बहुत थोड़ी-सी जगह लेते हैं इस मकान में। हमारी तरह दीवारों, खिड़कियों या छत से उनका खास लेना-देना नहीं है।''
- वे बहुत खुश हैं कि नए घर में उनका परिवार बढ़ रहा है और सभी खुश हैं।

अब फरहाद के चरित्र पर टिप्पणी लिखें।

चर्चा करें :

- प्रकृति में हर प्राणी की अपनी जगह होती है। क्या आप इससे सहमत हैं? कारण बताएँ।

''प्रकृति सबका घर है।''
लघु लेख तैयार करें।

प्रभात

जन्म : 10 जुलाई 1972

प्रभात का जन्म राजस्थान में हुआ। वे कवि होने के साथ-साथ कहानीकार भी हैं। 'पानियों की गाड़ियों में', 'झूलता रहा जाता रहा' आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

मदद लें...

खिली-खिली-सी - जैसे बड़ी खुशी में

छिपकली - പല്ലി, lizard, ಹಲ್ಲಿ, **பல்லி**

गिरगिट - ഓന്ത്, chameleon, ಓತಿ, **ஓணான்**

फूलना - വീർക്കുക, to puff in, ಹಿಗ್ಗಿಸುವುದು, **பெருக்குதல்**

पिचकना - ചുരുങ്ങുക, to puff out, ಕುಗ್ಗಿಸುವುದು, **சுருக்குதல்**

रंग बदलना - നിറം മാറുക, change the colour, ಬಣ್ಣಬದಲಿಸು, **நிறம் மாறுதல்**

ज़िक्र करना - उल्लेख करना

गिरगिटी आवाज़ में - ഓന്തിന്റെ ശബ്ദത്തിൽ, in the sound of chameleon ಓತಿಯ ಶಬ್ದದಲ್ಲಿ, **ஓணானின் சத்தத்தில்**

गिरगिटियाया - ഓന്ത് പറഞ്ഞു, the chameleon said, ಓತಿ ಹೇಳಿತು, **ஓணான் கூறியது**

दूभर - असह्य

सलीका - അന്തസ്സ്, dignity, ಯೋಗ್ಯತೆ/ಪಥಿಷ್ಠ, **தன்மானம்**

दराज़ मार्केट - बड़ा बाज़ार

तजुर्बा - अनुभव

उबासी लेना - കോട്ടുവായിടുക, to yawn, ಆಕಳಿಸು, **கொட்டாவிவிடுதல்**

घिग्गी बँध जाना - मुँह से आवाज़ न निकलना

टिकना - रहना

भला - अच्छा

संगमरमर - മാർബിൾ, marble, ಚಂದ್ರಕಾಂತ ಶಿಲೆ, **பளிங்கு கல்**

गुज़रना - जाना, निकलना

इरादा - निश्चय

बचा-खुचा - बाकी

वक्त - समय

चारों ओर नज़र घुमाना - चारों ओर देखना

मकड़ी - ചിലന്തി, spider, ಜೇಡ, **சிலந்தி**

दोहराना - ആവർത്തിക്കുക, to repeat, ಪುನರಾವರ್ತಿಸು, **திரும்பச்செய்தல்**

बदकिस्मती - दुर्भाग्य

शाकाहारी - സസ്യാഹാരി, vegetarian, ಸಸ್ಯಾಹಾರಿ, **சைவ உணவை உண்பவர்**

झक - चमकदार

पुताई - ലേപനം ചെയ്യപ്പെട്ട, coated, ಹೊದಿಸಿದ, **சாந்து பூசிய**

पपड़ी - ചുമരിൽ നിന്നും അടർന്നുവന്ന ഭാഗം, the part that came off the wall, ಗೋಡೆಯಿಂದ ಬೇರ್ಪಟ್ಟುಎದ್ದುಬಂದ ಸಣ್ಣಭಾಗ, **சுவரிலிருந்து அடர்ந்து வந்த பகுதி**

करवट बदलना - एक ओर से दूसरी ओर लेट जाना

सवालिया आँखों से देखा - ചോദ്യഭാവത്തിൽനോക്കി, looked questioningly, ಪ್ರಶ್ನಿಸುವ ಭಾವದಲ್ಲಿನೋಡಿತು, **வினவுவது போல் பார்த்தல்**

फुसफुसाना - धीमी आवाज़ में बोलना

मुलाकात - मिलन

मौका - अवसर

ततैया - കടന്നൽ, wasp, ಕಣಜದ ಹುಳ, குளவி

गायब होना - अप्रत्यक्ष होना

गिलहरी - അണ്ണാൻ, squirrel, ಅಳಿಲು, அணில்

लेना-देना नहीं है - कोई संबंध नहीं है

ठिकाने की ओर रुख करना - अपने वासस्थान की ओर मुड़ना

मच्छरदानी - കൊതുകുവല, mosquito net, ನುಸಿಬಲೆ, கொசுவலை

बुखारी - നെരിപ്പോട്, hearth, ಒಲೆ, அடுப்பு

मटकी - ചെറിയ മൺകുടം, small earthen pot, ಸಣ್ಣಮಣಿನ ಮಡಕೆ, சிறியமண்குடம்

जाला - मकड़ी का जाल

मक्खी - ഈച്ച, house fly, ನೊಣ, ஈ

पलंग - കട്ടിൽ, cot, ಮಂಚ, கட்டில்

गुदगुदी होना - ഇക്കിളിയാകുക, feel ticklish, ಕಚಗುಳಿ ಮಾಡು, கிச்சு கிச்சு மூட்டுதல்

मेंढ़कियाँ - തവളകൾ, frogs, ಕಪ್ಪೆಗಳು, தவளை கள்

आहिस्ते-से - धीरे-से

हथेली - കൈവെള്ള, palm, ಅಂಗೈ, உள்ளங்கை

पंखुड़ियाँ - ഇതളുകൾ, petals, ಎಸಳು(ದಳ), இதழ்

टहलना - ഉലാത്തുക, to walk, ವಾಯುಸೇವನೆಗೆ ಹೋಗು, உலாவுதல்

कविता

फूल

डॉ. रामदरश मिश्र

'जैसे बिना मौसम बहार आ गई हो' -इसपर अपना मत प्रकट करें।

'एक ही भाव से / हमेशा दहकते रहते हैं ये फूल' -कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा?

बाज़ार में सजा
प्लास्टिक के फूलों का उद्यान
क्या गज़ब की रंगत है
जैसे बिना मौसम बहार आ गई हो
न मिट्टी, न मिट्टी गोड़ने की समस्या
न खाद, न पानी
न चिड़ियों से रखवाली
न मौसम का इंतज़ार
एक ही भाव से
हमेशा दहकते रहते हैं ये फूल
मैं इन्हें देर तक देखता रहा–
फिर आँखों में उतरा गए चुभते हुए-से
अपने आँगन के खिलते-मुरझाते फूल

घर पहुँचते ही उन्हें उखाड़ फेंका
और दहकते हुए बाज़ार को सजा दिया
घर के पूरे अंतराल में
दिन बीते
महीने बीते
मौसम बीते
सारा घर एकरस इन रंगों में डूबा रहा

हवाओं ने कहा–
"हमें गंध चाहिए।"
मैं चुप रहा
मधुमक्खियों ने कहा–
"हमें रस चाहिए।"
मैं चुप रहा
तितलियों ने कहा–
"हमें कोमल स्पर्श चाहिए।"
मैं चुप रहा
माँ ने कहा–
"मुझे पूजा के लिए फूल चाहिए।"
मैं चुप रहा
पत्नी ने कहा–
"मुझे वेणी के लिए फूल चाहिए।"
मैं चुप रहा
लेकिन जब बच्चे ने कहा–
"बापू, मुझे फूल चाहिए
फूलों की पहचान के लिए।"
तो मैं चुप न रह सका
हृदय हाहाकार कर उठा–
"हाय, मैंने क्या कर दिया कि
बच्चे फूलों की पहचान से वंचित हो गए।"
मैंने प्लास्टिक के सारे फूल तोड़ डाले
और फावड़ा लेकर
अपने आँगन की मिट्टी से जूझने लगा
मिट्टी मुसकराई
हवा खिलखिलाई
जल कल-कल-कल-कल गाने लगा।

'सारा घर एकरस इन रंगों में डूबा रहा' -इसका मतलब क्या है?

हवा, मधुमक्खी, तितली आदि प्लास्टिक के फूलों से क्यों असंतुष्ट हैं?

बच्चा फूलों की पहचान करना चाहता है। यहाँ बच्चे का कौन-सा मनोभाव प्रकट होता है?

कविता की विशेष शैलियों को पहचानें और लिखें :

- बिना मौसम बहार आना
- .....
- .....
- .....
- .....

कविता के आधार पर पूर्ति करें :

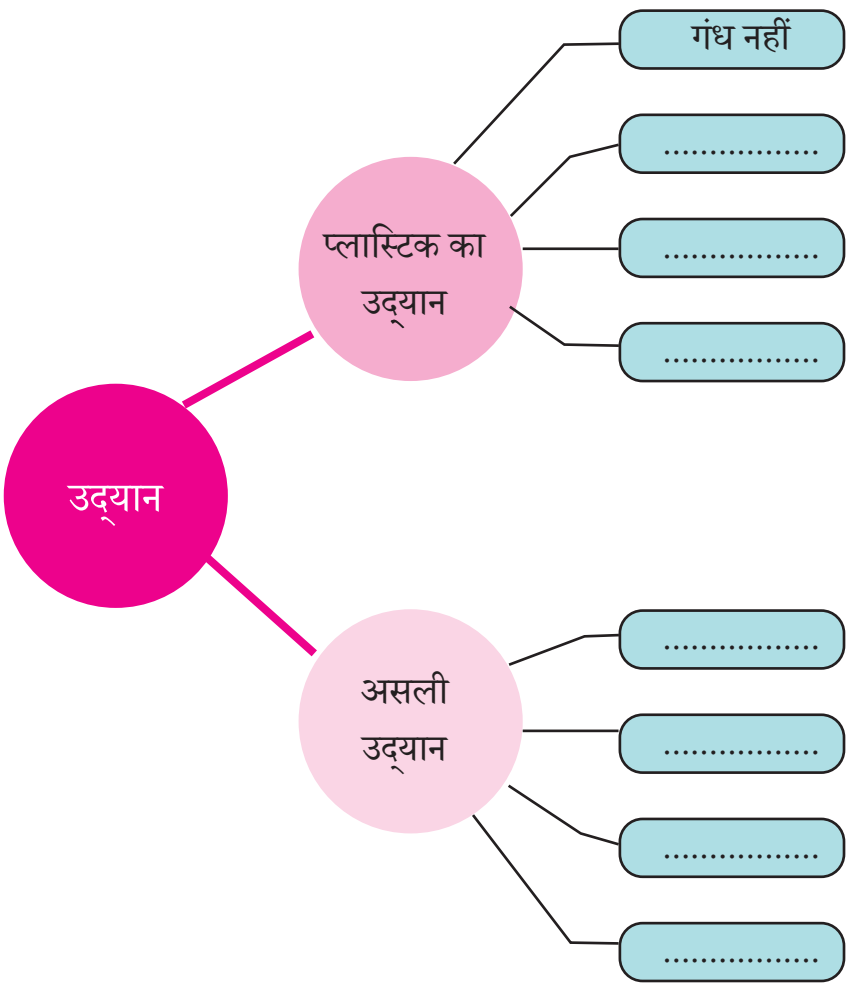

नीचे दिए वाक्य पढ़ें, रेखांकित शब्दों पर ध्यान दें :

- हमें फूलों की गंध चाहिए।
- मुझे वेणी के लिए फूल चाहिए।
- हमें रस चाहिए।

ऐसे वाक्य कविता से चुनकर लिखें।

चर्चा करें, टिप्पणी लिखें :

मनुष्य अपनी सुविधा के लिए प्रकृति से अलग रहते हैं। कविता के आधार पर इसपर विचार करें और विश्लेषणात्मक टिप्पणी लिखें।

'हरियाली की छाँव में' इकाई के आधार पर सही प्रस्ताव चुनकर लिखें :

- प्रकृति का साथ देने के लिए हमें साझा कदम उठाना चाहिए।
- मनुष्य प्रकृति में अपनी इच्छा के अनुसार जी सकते हैं।
- प्लास्टिक का इस्तेमाल करते समय हमें सावधानी बरतनी चाहिए।
- खूब पेड़ लगाने से पर्यावरण की सारी समस्याएँ हल हो जाएँगी।
- हमारे घर के अपशिष्टों का संस्करण सिर्फ प्रशासन का दायित्व है।
- प्रकृति में सभी जीव-जंतुओं को सहभाव से जीना चाहिए।
- प्राणियों के स्वस्थ जीवन के लिए स्वच्छता को बनाए रखना है।
- प्राकृतिक संसाधनों का इस्तेमाल अपनी सुख-सुविधाओं के अनुसार करना है।
- प्रकृति की अपनी एक संतुलित व्यवस्था है, जिसे बनाए रखें।

डॉ. रामदरश मिश्र

जन्म : 15 अगस्त 1924

रामदरश मिश्र हिंदी के प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं। वे समर्थ कवि, उपन्यासकार और कहानीकार हैं। उनका जन्म उत्तरप्रदेश में हुआ। 'पक गई है धूप', 'बारिश में भीगते बच्चे', 'पानी के प्राचीर', 'जल टूटता हुआ' आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। व्यास सम्मान, साहित्य अकादमी पुरस्कार आदि से वे सम्मानित हैं।

मदद लें...

गज़ब	-	विस्मय
रंगत	-	വർണഭംഗി, colourful, ವರ್ಣರಂಜಿತ, **வண்ணமயமான**
बहार	-	बसंत
मिट्टी गोड़ना	-	मिट्टी को नरम करना
खाद	-	उर्वरक
रखवाली	-	सुरक्षा
दहकना	-	ജ്വലിക്കുക, to blaze, ಪ್ರಜ್ವಲಿಸು, **ஒளிவிடுதல்**
चुभना	-	തുളച്ചുകയറുക, to pierce, ಭೇದಿಸಿಕೊಂಡು ಹೋಗು, **ஊடுருவியது**
उखाड़ फेंकना	-	പിഴുതെറിയുക, to root out, ಕಿತ್ತುಬಿಸಾಡು, **வேரோடு பிடுங்குதல்**
अंतराल	-	जगह
डूबा रहना	-	मग्न रहना
वेणी	-	बालों की चोटी
फावड़ा	-	कुदाल (मिट्टी खोदने का, लोहे का एक उपकरण)
जूझना	-	संघर्ष करना

इकाई मुखपृष्ठ की कवयित्री
पुष्पा मेहरा

जन्म : 10 जून 1941

पुष्पा मेहरा का जन्म उत्तर प्रदेश के मौरावाँ में हुआ। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कविताएँ, बाल-कविताएँ, क्षणिका, हाइकु आदि प्रकाशित हैं। 'अपना राग', 'अनछुआ आकाश', 'रेशा-रेशा' (काव्य-संग्रह), 'सागर-मन' (हाइकु काव्य-संग्रह) आदि उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

इकाई - 3

हम एक हैं

अहा! वही उदार है परोपकार जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

मैथिलीशरण गुप्त

लेख

जब गांधीजी की घड़ी चोरी चली गई

स्वयं प्रकाश

जब अंग्रेजों के अंतिम वायसरॉय लॉर्ड माउण्टबेटन भारत आए तो उन्होंने सोचा कि गांधीजी से बात किए बगैर भारत में कुछ नहीं किया जा सकता। तो परंपरानुसार उन्होंने गांधीजी को चाय पर बुलाया। और गांधीजी ने यह आमंत्रण स्वीकार भी कर लिया।

'गांधीजी से बात किए बगैर भारत में कुछ नहीं किया जा सकता।' माउण्टबेटन ने ऐसा क्यों सोचा होगा?

अब वायसरॉय भवन में इस चाय पार्टी की भारी तैयारियाँ शुरू हो गईं। गांधीजी चाय पिएँगे या दूध? वे शाकाहारी हैं या मांसाहारी? कुर्सी-मेज़ पर बैठकर नाश्ता करेंगे या फर्श पर बैठकर? रसोइए का ब्राह्मण होना ज़रूरी है या कोई भी चलेगा? उस दिन गांधीजी का उपवास तो नहीं रहेगा? उनके साथ कितने लोग आएँगे और

वे क्या खाएँगे? गांधीजी को नाश्ते में क्या खाना पसंद है? उसे पकाने के लिए रसोइए कहाँ से बुलवाए जाएँगे? और सामग्री कहाँ से मंगवाई जाएगी? वगैरह-वगैरह। श्रीमती माउण्टबेटन ने इसका सारा ज़िम्मा खुद ले लिया।

गर्मियों के दिन थे। जिस कमरे में गांधीजी को बिठाना था, उसे एक घंटा पहले से रूम कूलर चलाकर पूरी तरह ठंडा कर लिया गया। उस ज़माने में पूरे हिंदुस्तान में एक ही रूम कूलर था। मकसद तो गांधीजी को आराम देना ही था, लेकिन बस यहीं से गड़बड़ शुरू हो गई।

गांधीजी अपनी धोती से अच्छी तरह बदन लपेटकर उस कमरे में अपनी कुर्सी पर सिकुड़-सिमटकर बैठ गए और कुनमुनाने लगे। लॉर्ड माउण्टबेटन उनसे बड़ी-बड़ी राजनीति की बातें कर रहे थे और गांधीजी बड़े अनमनेपन से हाँ-हूँ किए जा रहे थे। आखिर माउण्टबेटन ने पूछा कि क्या बात है? गांधीजी बोले, “इस कूलर को प्लीज़ बंद कर दीजिए, मुझे सर्दी लग रही है।”

इस तरह अपनी शान दिखाने का पहला मौका वायसरॉय से छिन गया। खैर, बातें होती रहीं। लेकिन गांधीजी ने कोई खास रुचि नहीं ली।

लॉर्ड माउण्टबेटन ने पूछा कि क्या बात है? गांधीजी बोले “मैं आ रहा था तो रास्ते में रेलगाड़ी में किसीने मेरी घड़ी चुरा ली। वह बहुत पुरानी घड़ी थी और मुझे बहुत प्यारी थी। मैं उसे यहाँ... इस तरह... अपनी धोती में कमर से टाँगे रखता था और जब चाहे निकालकर टाइम देख लेता था। मैं रोज़ सोने से पहले नियम से उसमें चाबी भरता था। पता नहीं कौन उड़ा ले गया और क्यों?" और गांधीजी अफ़सोस में डूब गए।

वायसरॉय ने भी अफ़सोस ज़ाहिर किया, लेकिन उन्हें समझ में नहीं आया कि एक छोटी-सी पुरानी घड़ी के लिए यह आदमी वायसरॉय की दावत जैसे ज़िंदगी के सबसे शानदार मौके का मज़ा किरकिरा क्यों कर रहा है? क्या इसे एक नई घड़ी दिला दूँ? लेकिन यह मानेगा थोड़ी। यह तो यही कहेगा कि मुझे अपनी वही पुरानी घड़ी चाहिए।

खैर, जब नाश्ते की बारी आई तो गांधीजी भोलेपन से बोले, "आप लोग लीजिए। मैं तो अपना नाश्ता साथ लाया हूँ।"

सोचो! कितने लोगों में इतनी हिम्मत होगी कि राजा नाश्ते पर बुलाए और वे कह दें, “आप लीजिए। मैं तो अपना नाश्ता साथ लाया हूँ।’’

तभी गांधीजी के साथ गई उनकी सहयोगी ने खादी के एक पुराने-से थैले में

से एक छोटा-सा डिब्बा और एक चम्मच निकालकर गांधीजी के सामने रख दिया। डिब्बे में बकरी के दूध से बना दही था और चम्मच हालांकि टूटा हुआ था, लेकिन उसके टूटे हत्थे पर लकड़ी की खपच्ची धागे से बाँध दी गई थी।

'मैं तो अपना नाश्ता साथ लाया हूँ'- यहाँ गांधीजी के स्वभाव की कौन-सी विशेषता व्यक्त होती है ?

वायसरॉय लॉर्ड माउण्टबेटन और उनकी पत्नी गांधीजी को देखते रह गए।

आज सोचते हैं तो लगता है गांधीजी के इस व्यवहार के पीछे भी कई बातें छिपी हुई थीं। राजनीति में अक्सर कुछ बातें बगैर कहे भी कह दी जाती हैं।

रूम कूलर बंद करवाने का सीधा मतलब नए वायसरॉय को यह संदेश देना था कि ठंडे कमरों में बैठकर हिंदुस्तान पर हुकूमत नहीं की जा सकेगी। हमसे बात करनी है तो बाहर धूप में और खुले मैदान में आओ।

घड़ी खोने की बात को इतना बढ़ा-चढ़ाकर कहने का आशय यह जताना था कि जिस ब्रिटिश राज्य का दुनिया के सामने तुम इतना ढोल पीटते हो और गुण गाते हो उसमें मेरी घड़ी तक सुरक्षित नहीं है।

और इसका असर क्या हुआ? अगले दिन के समाचार पत्रों में इस बारे में कोई समाचार नहीं था कि गांधीजी और वायसरॉय में क्या बात हुई, लेकिन यह खबर बड़े-बड़े अक्षरों में थी कि गांधीजी की प्रिय घड़ी चोरी चली गई। हालांकि कुछ रोज़ बाद चोर ने साबरमती आश्रम जाकर गांधीजी को उनकी घड़ी लौटा भी दी।

और अपना नाश्ता...यानी माल -टाल नहीं...बकरी का दूध...क्योंकि भारत की गरीब जनता को यही उपलब्ध है। वैसे इसका एक और अर्थ यह भी हो सकता है कि हिंदुस्तान के लोग अपनी मेहनत की खाते हैं जबकि ब्रिटेन जैसे साम्राज्यवादी दूसरों की लूट पर ऐश करते हैं।

गांधीजी का यह मज़ेदार किस्सा मैंने लेपियर और कौलिन की पुस्तक 'फ्रीडम एट मिडनाइट' में पढ़ा है। अच्छी किताब है। कहीं मिले तो ज़रूर पढ़ना।

'राजनीति में अक्सर कुछ बातें बगैर कहे भी कह दी जाती हैं।' इसका मतलब क्या है?

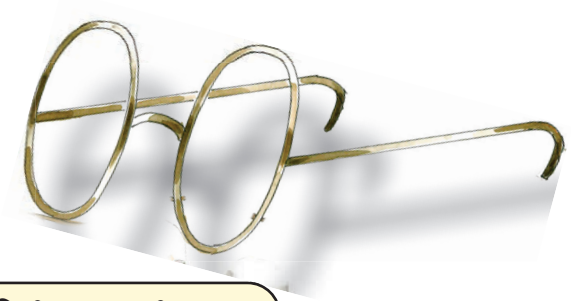

पठित लेख के आधार पर लिखें :

गांधीजी का व्यवहार	लेखक की व्याख्या
• वायसरॉय के साथ की चर्चा के समय अनमनापन दिखाना।	
• अपना नाश्ता खुद लाना।	

संबंध पहचानें, लिखें :

गांधीजी बोले, "मैं आ रहा था तो रास्ते में रेलगाड़ी में किसीने मेरी घड़ी चुरा ली। वह बहुत पुरानी घड़ी थी और मुझे बहुत प्यारी थी।"

- यहाँ **मैं** का संबंध किससे है ?
- पहचानें, **मेरी**, **मुझे** जैसे पद कैसे बनते हैं?
- लेख से सर्वनाम तथा उसके परसर्ग युक्त रूपों को चुनकर लिखें।

सर्वनाम	परसर्ग युक्त रूप
मैं	मेरी, मुझे

रेखांकित प्रयोगों पर ध्यान दें और नए वाक्य बनाएँ :

- रोमांचक मैच के बीच अचानक विराट के विकेट गिरने से सारा मज़ा किरकिरा हो गया।
- कोई भी संजू से कुछ मत कहिएगा, वह ढोल पीट देगा।

बातचीत लिखें :

गांधीजी की चाय पार्टी की तैयारियों के बारे में लेडी माउण्टबेटन और लॉर्ड माउण्टबेटन के बीच की संभावित बातचीत तैयार करें।

डायरी लिखें :

मान लें, गांधीजी के साथ की पहली मुलाकात के बारे में वायसरॉय ने डायरी लिखी। वह डायरी लिखें।

अनुबद्ध कार्य करें :

लेपियर और कौलिन की पुस्तक 'आज़ादी आधी रात को' (Freedom at Midnight) जैसी पुस्तक पढ़ें। गांधीजी के जीवन की अन्य दिलचस्प और प्रेरणादायक घटनाओं का परिचय पाएँ।

स्वयं प्रकाश

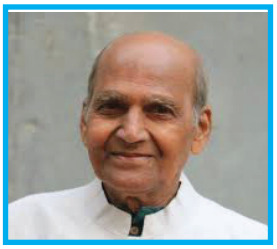

जन्म : 20 जनवरी1947
मृत्यु : 07 दिसंबर 2019

स्वयं प्रकाश हिंदी कहानीकार के रूप में मशहूर हैं। उनका जन्म मध्यप्रदेश में हुआ। 'सूरज कब निकलेगा', 'आएँगे अच्छे दिन भी', 'बीच में विनय', 'ईंधन' आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। वे रांगेय राघव पुरस्कार, पहल पुरस्कार आदि से सम्मानित हैं।

मदद लें...

बात किए बगैर	-	चर्चा किए बिना
फर्श	-	തറ, floor, ನೆಲ, தரை
रसोइया	-	खाना बनाने वाला
जिम्मा	-	दायित्व
मकसद	-	उद्देश्य
बदन	-	शरीर
लपेटना	-	പുതയ്ക്കുക, to cover, ಹೊದಿಸುವುದು, மூடுதல்
सिकुड़-सिमटकर बैठना	-	കൂനിക്കൂടിയിരിക്കുക, to hunch over, ಮುದುಡಿ ಕುಳಿತುಕೊಳ್ಳು, கூனி க்குறுகி இருத்தல்
कुनमुनाना	-	हल्का विरोध प्रकट करना
अनमनापन	-	उदासी
शान दिखाना	-	പ്രതാപം കാണിക്കുക, to flaunt one's nobility, ಪ್ರತಾಪ ತೋರಿಸು, தற்பெருமைகூறுதல்
छिन जाना	-	തട്ടിയെടുക്കപ്പെടുക, seized, ಕಸಿದುಕೊಳ್ಳು, பறிக்கப்படுதல்
टाँगना	-	തൂക്കിയിടുക, to hang, ತೂಗು ಹಾಕು, தொங்கவிடுதல்
अफ़सोस ज़ाहिर करना	-	दुख प्रकट करना
शानदार मौका	-	भव्य अवसर
मज़ा किरकिरा करना	-	आनंद नष्ट करना
भोलापन	-	നിഷ്കളങ്കത, innocence, ನಿಷ್ಕಳಂಕತೆ, ளங்கமில்லாத
टूटा हत्था	-	പൊട്ടിയ കൈപ്പിടി, broken stem of a spoon, ತುಂಡಾದ ಹಿಡಿಕೆ, உடைந்த கைப்பிடி
लकड़ी की खपच्ची	-	ചെറിയ കമ്പ്, small stick, ಸಣ್ಣಮರದ ಕಡ್ಡಿ, சிறிய மரக்குச்சி
धागा	-	ചരട്, thread, ದಾರ, கயிறு
के बगैर	-	के सिवा
हुकूमत करना	-	शासन करना
जताना	-	बताना
ढोल पीटना	-	കൊട്ടിഘോഷിക്കുക, to flaunt, ಪ್ರಚಾರ ಮಾಡು, விளம்பரம் செய்தல்
असर	-	प्रभाव
माल-टाल	-	बड़ा खाना
ऐश	-	സുഖലോലുപത, luxury, ಭೋಗವಿಲಾಸ, சிற்றின்பம்
मज़ेदार किस्सा	-	रसीली कहानी

कविता

जन-जन का चेहरा एक

मुक्तिबोध

चाहे जिस देश प्रांत पुर का हो
जन-जन का चेहरा एक।

'जन-जन' से कवि का मतलब क्या होगा?

एशिया की, यूरोप की, अमरीका की
गलियों की धूप एक।
कष्ट-दुख संताप की,
चेहरों पर पड़ी हुई झुर्रियों का रूप एक।
जोश में यों ताकत से बँधी हुई
मुट्ठियों का एक लक्ष्य!

'चेहरों पर पड़ी झुर्रियों का रूप' -किसकी ओर संकेत करता है?

पृथ्वी के गोल चारों ओर से धरातल पर
है जनता का दल एक, एक पक्ष।
जलता हुआ लाल कि भयानक सितारा एक
उद्दीपित उसका विकराल-सा इशारा एक।

कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा कि जन-जन का चेहरा एक है?

गंगा में, इरावती में, मिनाम में
अपार अकुलाती हुई,
नील नदी, आमेज़न, मिसौरी में वेदना से गाती हुई,
बहती-बहाती हुई ज़िंदगी की धारा एक।

जन-जीवन से नदी का क्या संबंध है?

संबंध पहचानें और जोड़कर लिखें :

नदी का नाम	मुख्य क्षेत्र
• गंगा	• म्यानमर
• नील	• भारत
• इरावती	• दक्षिण अमरीका
• आमेज़न	• मिस्र

सही मिलान करें :

जनता के चेहरे की झुर्रियाँ	जनता का विरोध
बँधी हुई मुट्ठियाँ	जनता की प्रतीक्षा
जलता हुआ सितारा	जनता का संघर्ष
अपार अकुलाती ज़िंदगी की धारा	जनता की वेदना

समान आशय वाली पंक्तियाँ चुनकर लिखें :

- अन्याय के विरोध में आवाज़ उठाने वालों का लक्ष्य एक है।
- शोषितों के सपने का जलता लाल सितारा एक है।

इसकी पूर्ति करें, कविता का आशय लिखें :

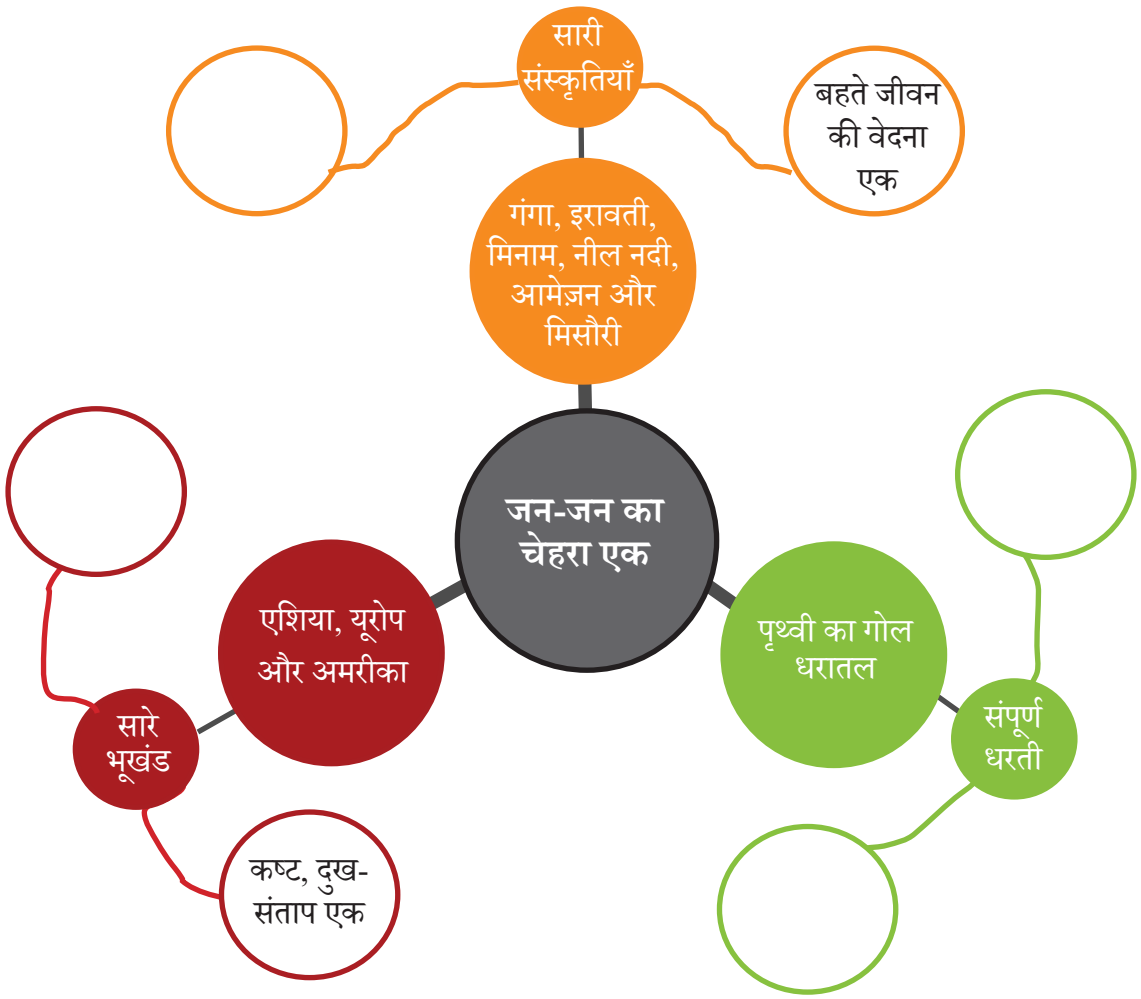

मुक्तिबोध

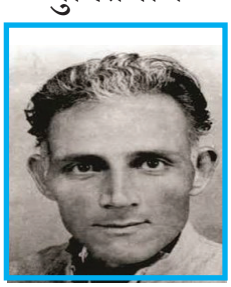

जन्म : 13 नवंबर 1917
मृत्यु : 11 सितंबर 1964

गजानन माधव मुक्तिबोध हिंदी साहित्य की प्रगतिशील काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि हैं। उनका जन्म मध्यप्रदेश में हुआ। 'चाँद का मुँह टेढ़ा है', 'भूरी भूरी खाक धूल', 'काठ का सपना', 'एक साहित्यिक की डायरी' आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

मदद लें...

प्रांत	-	प्रदेश
पुर	-	शहर
गली	-	തെരുവ്, street, ಗಲ್ಲಿ, தெரு /வீதி
धूप	-	വെയിൽ, sunlight, ಬಿಸಿಲು, வெயில்
झुर्रियाँ	-	ചുളിവുകൾ, wrinkles, ಸುಕ್ಕುಗಟ್ಟುವಿಕೆ, சுருக்கம்
जोश	-	ആവേശം, enthusiasm, ಆವೇಶ, உணர்ச்சி
ताकत	-	शक्ति
बँधी हुई मुट्ठी	-	ചുരുട്ടിയ മുഷ്ടി, clenched fist, ಮುಷ್ಟಿ ಹಿಡಿಯುವುದು, கை முட்டியை மடக்கி
धरातल	-	भूतल
उद्दीपित	-	ഉത്തേജിപ്പിക്കപ്പെട്ട, stimulated, ಉತ್ತೇಜಿಸಲ್ಪಟ್ಟ, தூண்டுதல்
विकराल	-	भीषण
अकुलाना	-	व्याकुल होना

इकाई मुखपृष्ठ के कवि
मैथिलीशरण गुप्त

जन्म : 3 अगस्त 1886
मृत्यु : 12 दिसंबर 1964

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त हिंदी के प्रसिद्ध कवि थे। हिंदी साहित्य के इतिहास में वे खड़ीबोली के महत्वपूर्ण कवि हैं। उनकी कृति 'भारत-भारती' भारत के स्वतंत्रता संग्राम के समय में काफ़ी प्रभावशाली सिद्ध हुई थी और इसी कारण से महात्मा गांधी ने उन्हें 'राष्ट्रकवि' का पद दिया था। सन् 1954 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया।

इकाई - 4

कामयाबी की राह पर

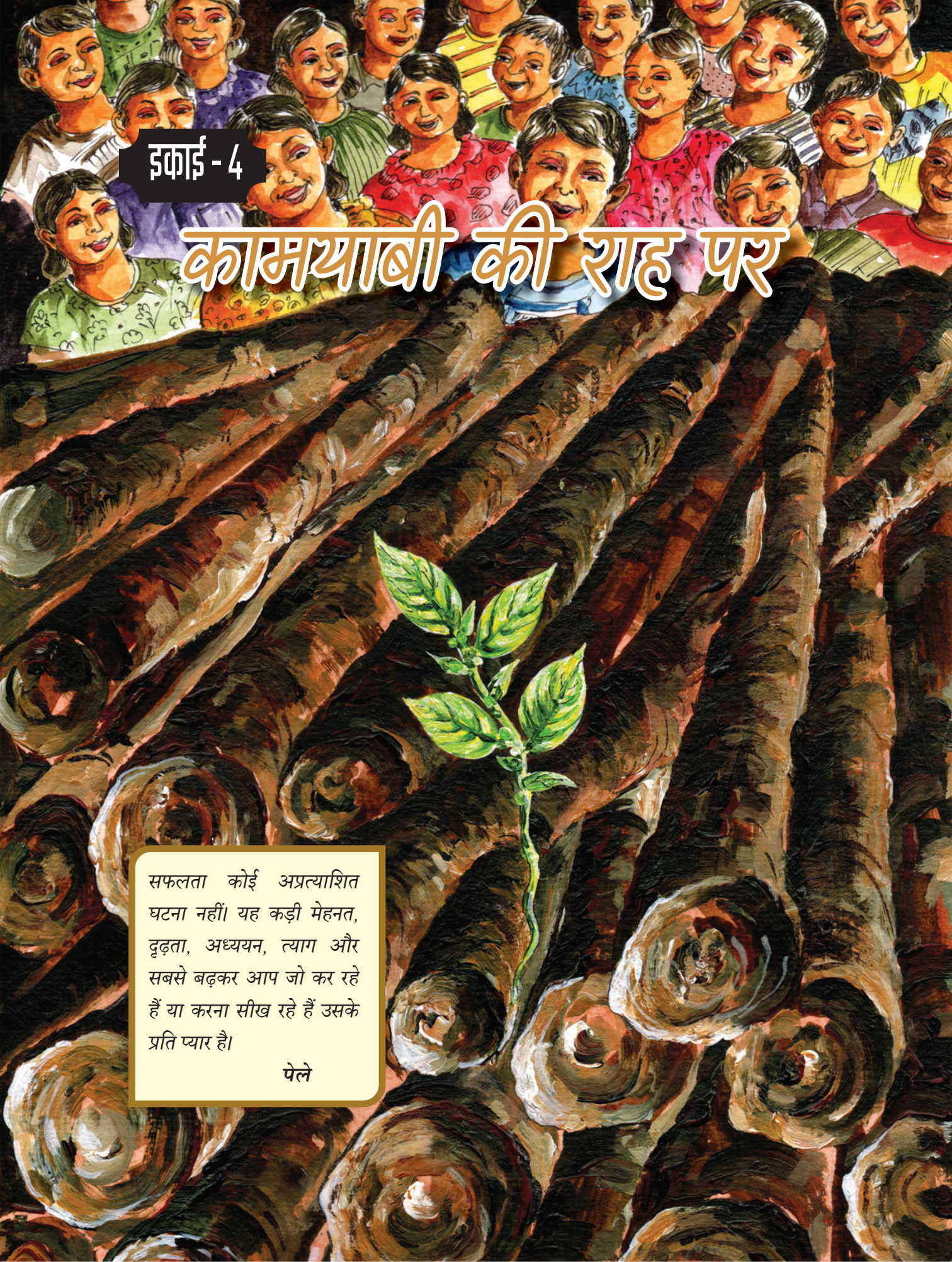

सफलता कोई अप्रत्याशित घटना नहीं। यह कड़ी मेहनत, दृढ़ता, अध्ययन, त्याग और सबसे बढ़कर आप जो कर रहे हैं या करना सीख रहे हैं उसके प्रति प्यार है।

पेले

लेख

फुटबॉल के दिल का राजा

सोपान जोशी

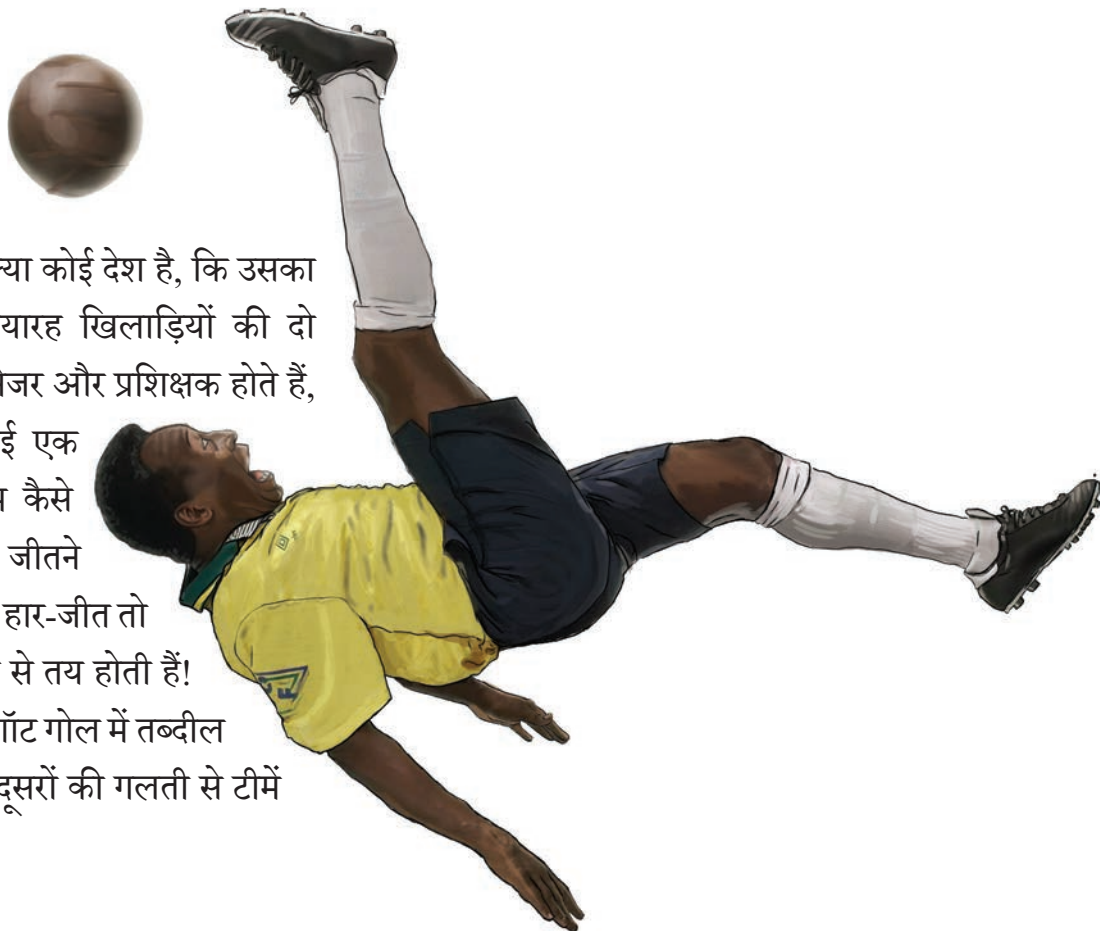

फुटबॉल क्या कोई देश है, कि उसका राजा हो? जिस ग्यारह खिलाड़ियों की दो टीमें खेलती हैं, मैनेजर और प्रशिक्षक होते हैं, उस खेल का कोई एक खिलाड़ी महानतम कैसे माना जा सकता है! जीतने की वजह से? किंतु हार-जीत तो ज़रा-ज़रा-सी बातों से तय होती हैं! कई बहुत बढ़िया शॉट गोल में तब्दील नहीं होते, जबकि दूसरों की गलती से टीमें जीत जाती हैं!

'हार-जीत तो ज़रा-ज़रा-सी बातों से तय होती हैं!' -इसपर अपना विचार प्रकट करें।

फिर फुटबॉलर पेले को खेल का राजा क्यों कहते हैं? 29 दिसंबर 2022 को 82 साल की उम्र में उनकी मृत्यु हुई। ब्राज़ील में उनकी शवयात्रा 13 किलोमीटर लंबी थी! अंतर्राष्ट्रीय फुटबॉल से वे 50 साल पहले रिटायर हो गए थे, क्लब के खेल से 1977 में।

उनके समय में और उसके बाद कमाल के कई खिलाड़ी हुए। अर्जेंटीना में अरफ्रेडो डी स्टीफानो और बाद में डिएगो माराडोना और लायनल मेसी। हंगरी के फेरेंच पुश्कास। जर्मनी के फ्रांज़ बेकेनबॉअर। हॉलैंड के योहान क्रायफ़। ब्राज़ील में तो गज़ब के खिलाड़ियों का ताँता लगा रहा है। सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी कहलाने का इनमें से हरेक का मज़बूत दावा है।

पेले तीन विश्व कप जीतनेवाले एकमात्र खिलाड़ी हैं। 1958 में ब्राज़ील की पहली विश्व कप विजय के समय छह गोल करने वाले पेले 17 साल के थे। उस प्रतियोगिता के सबसे बढ़िया खिलाड़ी ब्राज़ील के मिडफील्डर डीडी थे। उस टीम के करामाती खिलाड़ी गैरिंचा थे, जिन्हें फुटबॉल का सबसे बढ़िया ड्रिबलर कहा जाता है।

जब 1962 में ब्राज़ील ने विश्व कप दूसरी दफ़ा जीता, तब पेले दूसरे मैच में ही चोट खाके बाहर हो गए थे। इस बार गैरिंचा प्रतियोगिता के सबसे बेहतरीन खिलाड़ी थे। 1966 के विश्व कप में पेले पर इतने प्रहार हुए कि वे प्रतियोगिता से बाहर हो गए थे, ब्राज़ील भी।

1970 में तीसरा विश्व कप जीतने वाली ब्राज़ील टीम आज तक की सबसे बढ़िया फुटबॉल टीम कही जाती है। इसमें पेले के अलावा कई महारथी थे। सुंदर फुटबॉल खेलने में 1982 की ब्राज़ील टीम का नाम सबसे ऊपर आता है, जब पेले रिटायर हो चुके थे।

उनके 1279 गोल के विश्व रिकॉर्ड का लोग मज़ाक उड़ाते हैं, क्योंकि उनमें से अधिकतर ब्राज़ील के क्लब 'सांतोस' के लिए थे। उनकी अंतर्राष्ट्रीय लोकप्रियता का एक कारण यह था कि सांतोस उन्हें दुनिया भर में नुमाइशी मैच खेलने के लिए घुमाता रहा। इस तरह की कई और बातें हैं। किंतु पेले की आलोचना करने वाले भी मानते हैं कि उनके जैसा संपूर्ण खिलाड़ी कोई दूसरा नहीं हुआ। उनके पास फुटबॉल का हर हुनर था। ऊँचे दर्जे का था। उनके समय में डिफेण्डर आक्रामक खिलाड़ियों के शरीर पर सीधे हमले करते थे और रेफरी यह सब होने देते थे। पाँच-फुट-आठ-इंच के पेले से अधिक मार-पिटाई किसी दूसरे खिलाड़ी की नहीं हुई। उन्होंने रोना नहीं रोया, शिकायत नहीं की। वे खुद दूसरों पर फाउल करने में चूकते नहीं थे।

जीतने के लिए गलत रास्ता अपनाने के संबंध में आपका मत क्या है?

उन्होंने कड़े अभ्यास से अपने शरीर को मज़बूत बनाए रखा, जबकि गैरिंचा ने अपनी प्रतिभा शराब पी-पीके बिगाड़ दी। उम्र के साथ जब उनकी आँख और शरीर कमज़ोर पड़ गए, तब उन्होंने अपना खेल टीम की ज़रूरत के हिसाब से बदल लिया। वे खुद जितने गोल करते थे, अपने करिश्मे से दूसरों को भी गोल बनाके देते थे। उनकी अनोखी प्रतिभा का डर तो उनके प्रतिद्वंद्वियों में था ही, उनके लिए एक अनूठा सम्मान भी था। उनके हुनर की तरह ही उनकी मुसकान भी मशहूर थी।

'लोगों के दिल में जगह पाने के लिए हुनर के साथ मुसकान की भी ज़रूरत है' - यह कहाँ तक सही है? क्यों?

टी.वी., इंटरनेट और सोशियल मीडिया के पहले पेले का नाम सारी दुनिया जानती थी। घर-घर में पता था कि पेले कौन हैं। वे पहले खिलाड़ी थे जिनपर अनेक फिल्में बनीं। ऐसे कई गोलकीपर थे जो अपना परिचय देते समय बताते थे कि पेले ने उन्हें कैसे चकमा दिया था।

फुटबॉल की लोकप्रियता पेले की ख्याति के साथ दुनिया भर में फैली। और यह सब उन्होंने तब किया जब अफ्रीकी मूल के काले वर्ण के लोगों का दुनिया भर में अपमान होता था। उन्हें कमतर आँका जाता था। बिना स्कूल की शिक्षा के, भयानक गरीबी और भुखमरी से निकल के फुटबॉल के दिल पर इस तरह किसी दूसरे ने राज नहीं किया। क्या आगे कोई कर सकेगा?

कई कठिनाइयों के शिकार होने के बावजूद पेले ने लोगों के दिल पर राज किया। यह कैसे संभव हो सका?

जी हाँ, फुटबॉल का एक राजा है, हमेशा रहेगा। इसे नकारने की हिम्मत न कीजिएगा!

क्या अपने आप को पेले समझ रखा है!

पेले जैसे अमर रहने के लिए आप अपनी ज़िंदगी को कैसे जीना चाहेंगे?

खिलाड़ी को पहचानें, देश का नाम जोड़कर लिखें :

- लायनल मेसी **अर्जेंटीना** के खिलाड़ी हैं।
- योहान क्रायफ़ ..... के खिलाड़ी हैं।
- माराडोना ..... के खिलाड़ी हैं।
- फ्रांज़ बेकनबॉअर ..... के खिलाड़ी हैं।
- गैरिंचा ..... के खिलाड़ी हैं।
- .....।

लेख पढ़ें, नमूने के अनुसार लिखें :

- **उन्नीस सौ अठावन** की विश्व कप प्रतियोगिता में ब्राज़ील की पहली विजय हुई।
- ..... में पेले विश्व कप प्रतियोगिता से बाहर हो गए।
- ..... में ब्राज़ील ने तीसरी विश्व कप प्रतियोगिता जीती।
- ..... में पेले क्लब के खेल से रिटायर हो गए।
- .....

पहचानें, 'खिलाड़ी' शब्द की विशेषता बताने के लिए लेख में किन-किन शब्दों का प्रयोग किया गया है :

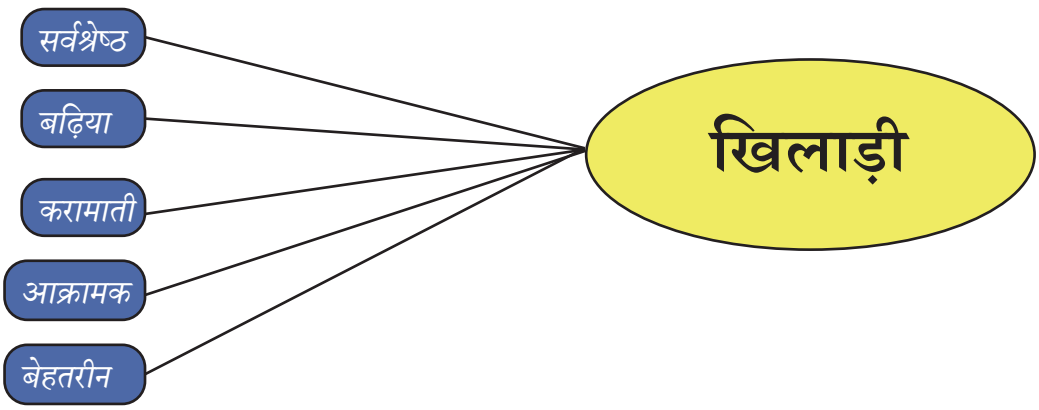

ढूँढ़कर लिखें, प्रत्येक शब्द का प्रयोग किन-किन शब्दों की विशेषता बताने के लिए किया गया है :

- लंबी
- मज़बूत
- सुंदर
- नुमाइशी
- कड़े

पढ़ें, रेखांकित शब्दों पर ध्यान दें :

- पेले जैसा **दूसरा** खिलाड़ी नहीं हुआ।
- किसी **दूसरे** खिलाड़ी की मार-पिटाई नहीं हुई।
- ब्राज़ील ने विश्व कप **दूसरी** दफ़ा जीता।

पेले के जीवन पर बने वृत्तचित्र (डॉक्यूमेंटरी) देखें और इस वर्कशीट की पूर्ति करें :

पूरा नाम	:
जन्म	:
परिवार	:
शिक्षा	:
कार्यक्षेत्र	:
उपलब्धियाँ	:
निधन	:

सार्थक वाक्य में बदलें :

पेलेअपनेमातापिताकापहलाबेटाथा।

पेले की जीवनी तैयार करें।

परखें :

- व्यक्ति का नाम, जन्म और जन्म स्थान लिखे हैं। ☐
- व्यक्तिगत जीवन की बातें जोड़ी हैं। ☐
- शिक्षा एवं पेशे का उल्लेख किया है। ☐
- जीवन की महत्वपूर्ण घटनाएँ शामिल हैं। ☐
- मुख्य उपलब्धियों को जोड़ा है। ☐
- दुनिया भर व्यक्ति के प्रभाव का उल्लेख किया है। ☐

सोपान जोशी

जन्म : 20 अक्तूबर1973

सोपान जोशी का जन्म मध्यप्रदेश के इंदौर में हुआ। वे पत्रकार, लेखक और संपादक हैं। 'जल थल मल', 'एक था मोहन' आदि उनकी प्रकाशित रचनाएँ हैं।

मदद लें...

खिलाड़ी - खेलनेवाला

प्रशिक्षक - പരിശീലകൻ, trainer, ತರಬೇತುದಾರ, **பயிற்சியாளர்**

की वजह - के कारण

हार-जीत - जय-पराजय

ज़रा-सी - हल्की-सी

तय होना - निश्चित होना

बढ़िया - बहुत अच्छा

तब्दील होना - बदलना

उम्र - आयु

कमाल - आश्चर्य

ताँता लगाना - कतार या लाइन लगाना

मज़बूत दावा - ഉറച്ച അവകാശവാദം, strong claim, ಬಲವಾದ ಹಕ್ಕು, **வலிமையான உரிமை**

प्रतियोगिता - മത്സരം, match, ಸ್ಪರ್ಧೆ, **போட்டி**

दूसरी दफ़ा - दूसरी बार

चोट खाके - മുറിവേറ്റ്, wounded, ಗಾಯಗೊಂಡ, **காயப்பட்ட**

बेहतरीन - बहुत बढ़िया

मज़ाक उड़ाना - പരിഹസിക്കുക, make fun of, ಪರಿಹಾಸಗೈಯು, **கேலி செய்தல்,**

अधिकतर - अधिकांश

नुमाइशी मैच - പ്രദർശന മത്സരം, exhibition match, ಪ್ರದರ್ಶನ ಸ್ಪರ್ಧೆ, **கண் காட்சிப்போட்டி**

आलोचना - വിമർശനം, criticism, ವಿಮರ್ಶೆ, **விமர்சனம்**

हुनर - प्रतिभा

ऊँचे दर्जे का - ഉന്നത നിലവാരത്തിലുള്ള, high level, ಉನ್ನತ ಮಟ್ಟದ, உயர் நிலையிலுள்ள

हमला - आक्रमण, प्रहार

बिगाड़ना - नाश करना

कमज़ोर - दुर्बल

खुद - स्वयं

करिश्मा - चमत्कार

अनोखी - विचित्र

अनूठा - अनोखा

सम्मान - आदर

मशहूर - प्रसिद्ध

पता था - मालूम था

ख्याति - प्रसिद्धि

चकमा देना - കബളിപ്പിക്കുക, deceive, ಮೋಸ ಮಾಡು, ஏமாற்றுதல்

कमतर आँकना - തരംതാഴ്ത്തി കാണുക, to look down on, ಕೀಳಾಗಿ ಕಾಣು, பாகுபாடுகா ட்டுதல்

भुखमरी - പട്ടിണി മരണം, death by starvation, ಹಸಿವಿನ ಮರಣ, பட்டினிமரணம்

राज करना - ആധിപത്യം സ്ഥാപിക്കുക, dominate, ಆಧಿಪತ್ಯಸ್ಥಾಪಿಸು, ஆதிக்கம் செலுத்துதல்

नकारना - अस्वीकार करना

हिम्मत - साहस

घर, पेड़ और तारे की याद

लोककथा

मंगलेश डबराल

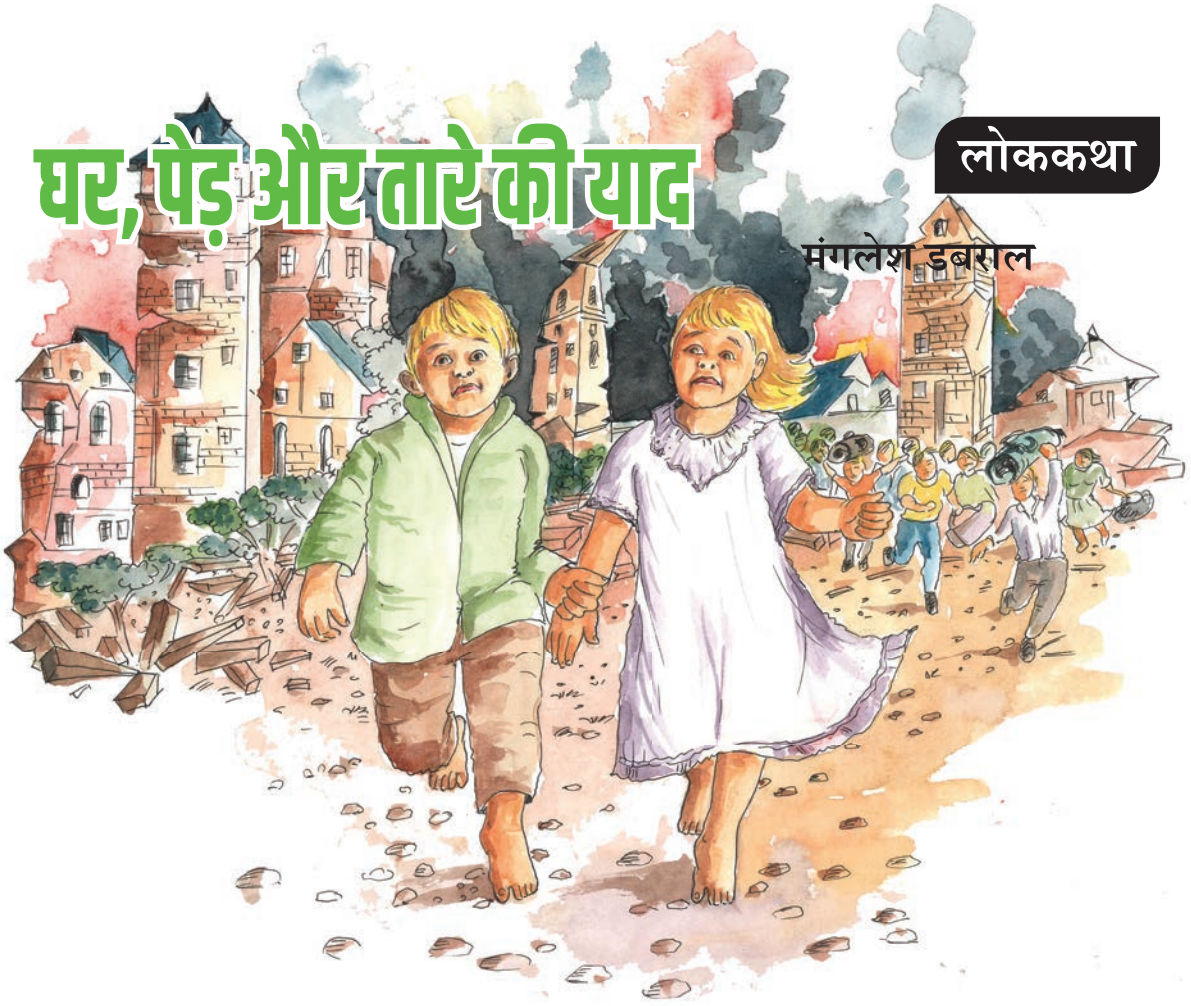

उत्तरी ध्रुव के पड़ोस में जो देश हैं उनमें फिनलैंड भी है। उसकी सीमाएँ रूस से मिलती हैं। करीब दो सौ साल पहले फिनलैंड को युद्ध में बहुत नुकसान हुआ। शहरों को जला दिया गया। फ़सलें नष्ट हो गईं। हज़ारों लोग मारे गए। हज़ारों मौतों के बाद कई बीमारियाँ फैल गईं। हज़ारों लोग अपने घरों को छोड़ कर जाने के लिए मज़बूर हो गए। कुछ लोगों को दुश्मनों की सेना पकड़ कर ले गई। बहुत से परिवारों में माता-पिता और बच्चे भी अलग-अलग हो गए। जब कुछ दिन बाद कुछ भागे हुए लोग वापस आए तो उन्हें जले हुए घरों और फ़सलों के अलावा कुछ भी नहीं मिला। उन्होंने बहुत मेहनत करके फिर से अपने घरों को बनाया। फ़सलें उगाईं और लोगों के लौटने का इंतज़ार करने लगे। यह कहानी उसी दौर की है।

युद्ध के शिकार लोगों को कौन-कौन सी परेशानियाँ झेलनी पड़ती हैं?

युद्ध के दौरान एक भाई और उसकी बहन घर से बिछुड़ गए। भाई आठ साल का था और बहन छह साल की। वे एक दूर देश

में पहुँचे। वहाँ उन्हें घर की बहुत याद आती थी। वे इतने छोटे थे कि उन्हें वापस लौटने का रास्ता पता नहीं था। उनके पास-पड़ोस के लोग बहुत भले थे। वे उनकी देखभाल करने लगे। कुछ साल बीते और बच्चे बड़े होते गए। लेकिन वे अपने माता-पिता और देश को नहीं भूल पाए। उन्हें आँगन में खड़े सनोबर (भोज) के पेड़ की भी याद आती थी जिसपर हर सुबह दो पक्षी बैठ कर गाते थे और रात में उसकी शाखाओं के बीच से एक चमकीला तारा दिखाई देता था।

एक दिन खबर आई कि अब फिनलैंड में शांति है और घरों से बिछुड़े लोग लौट सकते हैं। भाई-बहन को लगा कि उन्हें भी घर लौटना चाहिए। उन्होंने अपनी देखभाल करने वाले अभिभावकों से इसकी अनुमति माँगी।

अभिभावकों ने हँसते हुए कहा, "पता है, तुम्हारा देश यहाँ से कितनी दूर है? कैसे पहुँचोगे?"

बच्चों ने जवाब दिया, "हम किसी तरह पहुँच जाएँगे, भले ही इसमें बहुत दिन लग जाएँ।"

'हम किसी तरह पहुँच जाएँगे' -इस कथन से बच्चों का कौन-सा मनोभाव प्रकट होता है?

अभिभावकों ने कहा, "यहाँ तुम्हारे पास घर, कपड़े, भोजन और दोस्त, सब कुछ हैं। तुम्हारे देश में अभी बहुत गरीबी और अभाव है। वहाँ तुम्हें भूखा रहना पड़ेगा और खुरदुरे बिस्तर पर सोना पड़ेगा। फिर, पता नहीं, तुम्हारा घर बचा भी है या नहीं और तुम्हारे माता-पिता जीवित भी हैं या नहीं। "

बच्चों ने कहा, "फिर भी हम घर जाना चाहते हैं। हमें माता-पिता की बहुत याद आती है। और घर के आँगन में खड़े सनोबर के पेड़ की भी।"

अभिभावकों ने कहा, "लेकिन तुम कई साल से अपने घर से दूर हो। जब तुम यहाँ आए थे तो सिर्फ आठ और छह साल के थे। तुम जिस सड़क से आए थे, उसे भूल गए होगे। तुम्हें यह भी याद नहीं होगा कि तुम्हारे माता-पिता कैसे दिखते हैं। और फिर, तुम्हें रास्ता कौन बताएगा?"

लड़के ने जवाब दिया, "मुझे याद है कि मेरे पिता के घर के सामने एक बड़ा-सा सनोबर का पेड़ है। हर सुबह दो प्यारे पक्षी वहाँ गाते हैं। मुझे यह भी याद है कि रात को पेड़ की शाखाओं के बीच से एक चमकीला तारा दिखाई देता है।"

अभिभावकों ने कहा, "घर लौटते हुए तुम मुसीबत में ही पड़ोगे। "

इसके बावजूद बच्चों ने घर लौटने की ज़िद नहीं छोड़ी। अपने देश और माता-

पिता को भुलाना उनके लिए असंभव हो गया। उनकी रातों की नींद उड़ गई।

बच्चे क्यों परेशान हैं?

रात को भाई बहन से पूछता, “क्या तुम सो रही हो?"

बहन कहती, "नहीं। मुझे घर की याद आ रही है। "

बहन भाई से पूछती, “क्या तुम सो रहे हो?"

भाई कहता, "नहीं। मैं घर के बारे में सोच रहा हूँ।" दोनों ने तय किया कि एक दिन चुपके से भाग चलें। कभी न कभी घर मिल ही जाएगा।

एक रात जब आसमान में चाँद चमक रहा था, दोनों बच्चों ने अपने कुछ कपड़े इकट्ठा किए और चल पड़े। चाँद की रोशनी में रास्ता दिखाई दे रहा था।

कुछ दूर चलने पर बहन बोली, “भाई, लगता है हम कभी घर नहीं पहुँच पाएँगे।”

भाई ने कहा, "चलो, हम उत्तर-पश्चिम दिशा की ओर चलते हैं। मुझे उम्मीद है कि हम जरूर सनोबर के पेड़ और तारे के पास पहुँच पाएँगे। उस पेड़ के बीच से तारा दिखाई देगा तो समझना कि घर आ गया है।"

दोनों बच्चे हिम्मत के साथ आगे बढ़ते गए। लड़के ने अपनी और बहन की रक्षा के लिए बलूत के एक पेड़ से एक अच्छी-सी टहनी तोड़ कर अपने पास रख ली।

चलते-चलते एक दिन वे एक चौराहे पर पहुँचे। उन्हें पता नहीं था कि आगे कौन-सा रास्ता लें।

अचानक उन्होंने दो छोटे पक्षियों को देखा जो सड़क के किनारे एक पेड़ पर गा रहे थे।

भाई बोला, "यह रास्ता सही है। मैं इसे पक्षियों के गीत से जानता हूँ। वे हमारी मदद करने के लिए आए हैं। "

बच्चे उसी रास्ते पर चल दिए। पक्षी भी उनके साथ धीरे-धीरे उड़ान भरते रहे और पेड़ों की शाखाओं पर बैठते रहे। बच्चों ने पेड़ों से जामुन, बेर और दूसरे जंगली फल तोड़कर अपनी भूख मिटाई और झरनों का पानी पिया।

इतने लंबे समय तक भटकने से बहन बहुत थक गई थी। उसने भाई से पूछा, "हमें अपना सनोबर का पेड़ कब मिलेगा?"

भाई ने कहा, "जब हम लोगों को वह भाषा सुनाई देगी, जो हमारे माता-पिता बोलते थे।"

चलते-चलते जंगल में ठंड बढ़ने लगी। बहन ने फिर से सनोबर के पेड़ के बारे में पूछा। भाई ने उसे थोड़ा धैर्य रखने के लिए कहा।

धीरे-धीरे उनका पुराना देश छूट गया। पहले ज़मीन समतल थी, लेकिन अब वे पहाड़ों, नदियों और झीलों के देश में आ गए थे। बहन ने पूछा, "भाई, हम खड़ी पहाड़ियों पर कैसे पहुँचेंगे?"

भाई ने हिम्मत बँधाई, "मैं तुम्हें ले जाऊँगा।"

रास्ते में कुछ नदियाँ और झीलें पड़ीं। लेकिन वहाँ उन्हें नावें मिल गईं। भाई बहन को बिठाकर नाव खेता रहा। दोनों पक्षी भी उनके साथ-साथ उड़ान भरते और रुकते रहे।

एक शाम जब वे बहुत थके हुए थे, तो उन्होंने कुछ जली हुई इमारतों को देखा। उनके पास ही एक नया फार्म हाउस बना था। रसोई के दरवाज़े के बाहर एक लड़की सब्जियाँ छील रही थी।

"क्या हमें खाने के लिए कुछ दे सकती हैं?" भाई ने पूछा।

लड़की ने जवाब दिया, "हाँ, आओ। माँ रसोई में हैं। वे ज़रूर तुम्हें कुछ देंगी। "

भाई ने बहन की गर्दन को बाँह में लिपटाया और कहा, "क्या तुमने सुना? यह लड़की वही भाषा बोल रही है जो हमारे माता-पिता बोलते थे। अब हम सनोबर के पेड़ और तारे की तलाश शुरू कर सकते हैं।"

दोनों बच्चे रसोई में गए जहाँ उन्हें अच्छा खाना मिला। उन्होंने अपनी पूरी कहानी बताई और कहा कि हमारे पास घर की एक ही निशानी है। उसके सामने सनोबर का एक पेड़ है। उसकी शाखाओं में हर सुबह दो पक्षी गाते हैं और रात में उनके

बीच एक खूब चमकीला तारा दिखाई देता है।

घर के लोगों ने कहा, "यहाँ हज़ारों सनोबर हैं। उनपर हज़ारों पक्षी गाते हैं और हज़ारों तारे आसमान में चमकते हैं। तुम अपना घर कैसे पहचानोगे?"

भाई-बहन ने जवाब दिया, "जब हम अपने देश पहुँच चुके हैं, तो हमें वह पेड़ भी मिल जाएगा। यहाँ तक पहुँचने के लिए दो पक्षी भी हमें रास्ता बताते रहे हैं।"

दोनों बच्चों ने इसी तरह सफ़र जारी रखा। जगह-जगह गरीबी फैली हुई थी। लेकिन वे जहाँ-जहाँ गए, उन्हें खाने और रात बिताने के लिए जगह मिलती रही। लोग उन्हें बहुत सहानुभूति से देखते थे।

'उन्हें खाने और रात बिताने के लिए जगह मिलती रही।' -यहाँ शरणार्थियों के प्रति लोगों का कौन-सा मनोभाव प्रकट होता है?

"यह रहा हमारा पेड़ !" भाई की आँखों से खुशी के आँसू बहने लगे।

"और वह हमारा तारा।" बहन पहले हँसी और फिर रोने लगी।

अपने लक्ष्य पर पहुँचने का संकेत मिलने पर भाई-बहन आँसू बहा रहे हैं। इसका कारण क्या होगा?

वे एक-दूसरे से लिपट गए। भाई ने कहा, "यह वह खलिहान है जहाँ पिता के घोड़े खड़े रहते थे।" "और यह कुआँ है जहाँ से माँ मवेशियों के लिए पानी लाती थीं।" बहन ने कहा।

भाई ने कहा, "चलो, घर के अंदर चलते हैं।"

"पहले तुम जाओ।" बहन ने कहा, "मुझे डर लगता है। पता नहीं माँ-पिता जीवित भी हैं या नहीं।"

अंदर कमरे में एक बूढ़ा आदमी अपनी पत्नी के साथ बैठा था और कह रहा था, "वसंत फिर से आ गया है। पक्षी गा रहे हैं। फूल जगह-जगह झाँक रहे हैं। लेकिन हमारे दिल में खुशी की कोई उम्मीद नहीं है।"

'लेकिन हमारे दिल में खुशी की कोई उम्मीद नहीं है' -उनकी ज़िंदगी से इस कथन का क्या संबंध है?

तभी दरवाजा खुला। एक लड़का और एक लड़की अंदर आए और उन्होंने खाने के लिए कुछ माँगा।

"बच्चो, पास आओ।" उस बूढ़े आदमी ने कहा, "आज रात हमारे साथ रहो। हमारे बच्चे अगर हमारे पास होते तो बिलकुल तुम्हारे जैसे सुंदर होते।" कहते-कहते उसके आँसू आ गए।

बच्चों से नहीं रहा गया। उन्होंने अपने पिता और माँ को गले लगा लिया और रोते हुए कहा, "हम ही आपके बच्चे हैं। हम वापस लौट आए हैं। हम सनोबर के पेड़ से ही अपने घर को पहचान गए थे। "

खुशी के मारे माता-पिता की आँखें छलक पड़ीं। उन्होंने दोनों के गालों को चूमा। माँ ने कहा, "मुझे पता था कि आज कोई अच्छी बात होने वाली है। आज सुबह-सुबह हमारे पेड़ की शाखाओं में दो पक्षी बहुत मिठास के साथ गा रहे थे।"

भाई-बहन और माँ-बाप के मिलन के वक्त प्रकृति भी खुश है। कहानी से कुछ उदाहरण पेश करें।

भाई ने कहा, "हाँ, आज तारा भी पत्तियों के बीच पहले से कहीं ज़्यादा चमक रहा है। अब हमें अपना घर मिल गया है। हमारी भटकन खत्म हो गई है। "

'हमारी भटकन खत्म हो गई है' -क्या संसार के सारे शरणार्थी इस तरह अपने घर पहुँच पाते हैं? अपनी राय बताएँ।

अपने घर वापस पहुँचने के लिए भाई-बहन किन-किन निशानों की याद करते हैं? कहानी से ढूँढ़कर लिखें।

भाई-बहन को अपने घर पहुँचाने में कइयों ने अपनी भूमिका निभाई है। ऐसे प्रसंग कहानी से चुनकर लिखें :

जैसे,

- गीत गानेवाले दो छोटे पक्षियों ने रास्ता दिखाया।
- .....
- .....
- .....
- .....

सही मिलान करें :

पात्र	कथन	मनोभाव
भाई	मुझे पता था कि आज कोई अच्छी बात होनेवाली है।	भाई-बहन के भविष्य पर आशंका।
अभिभावक	भाई, हम खड़ी पहाड़ियों पर कैसे पहुँचेंगे?	सफलता पर खुशी।
बहन	अब हमें अपना घर मिल गया है। हमारी भटकन खत्म हो गई है।	जीवन में खुशियों के लौट आने की प्रतीक्षा।
माँ	घर लौटते हुए तुम मुसीबत में ही पड़ोगे।	रास्ते की बाधाओं का डर।

जैसे :-

भाई - अब हमें अपना घर मिल गया है। हमारी भटकन खत्म हो गई है। - सफलता पर खुशी।

चरित्र पर टिप्पणी लिखें :

- इस कहानी का कौन-सा पात्र आपको अधिक पसंद आया? क्यों?
- कहानी के भाई के चरित्र पर टिप्पणी लिखें।

संवाद लिखें, रोलप्ले करें :

बहुत भटकने के बाद भाई-बहन अपने माता-पिता से मिल सके। इस प्रसंग का संवाद लिखें और कक्षा में रोलप्ले प्रस्तुत करें।

इन वाक्यों के रेखांकित शब्दों पर ध्यान दें :

- मैं तुम्हें ले **जाऊँगा।**
- तुम अपना घर कैसे **पहचानोगे?**
- हम किसी तरह पहुँच **जाएँगे।**
- कभी न कभी घर मिल ही **जाएगा।**
- पेड़ के बीच से तारा दिखाई **देगा।**
- वह भाषा सुनाई **देगी।**

बताएँ, रेखांकित शब्दों का संबंध वाक्य के किस शब्द से है।

पटकथा के दृश्य के इस नमूने पर ध्यान दें :

दृश्य - 1

पहाड़ी रास्ता। शाम का समय।

(दूर से पुरानी जली हुई इमारतें दिख रही हैं। एक बड़ी लड़की फार्म हाउस की रसोई के दरवाज़े के बाहर बैठी सब्जियाँ छील रही है। लगभग 11 साल की लड़की और 13 साल का लड़का उस बड़ी लड़की से बात कर रहे हैं।)

लड़का : (संकोच के साथ) क्या हमें खाने के लिए कुछ दे सकती हैं?

बड़ी लड़की : हाँ, आओ। माँ रसोई में हैं। वह ज़रूर तुम्हें कुछ देंगी।

लड़का : बहुत शुक्रिया दीदी। (लड़का बहन की गर्दन को बाँह में लिपटाते हुए धीमी आवाज़ में) क्या तुमने सुना? यह लड़की वही भाषा बोल रही है जो हमारे माता-पिता बोलते थे। अब हम सनोबर के पेड़ और तारे की तलाश शुरू कर सकते हैं। चलो हम रसोई में चलते हैं।

(दोनों बच्चे रसोई की ओर चलते हैं।)

अब कहानी के किसी मार्मिक प्रसंग पर पटकथा का एक दृश्य लिखें।

मंगलेश डबराल

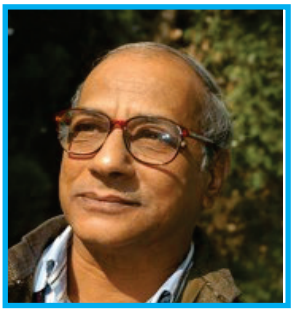

जन्म : 16 मई 1948
मृत्यु : 09 दिसंबर 2020

मंगलेश डबराल का जन्म उत्तराखंड में हुआ। 'पहाड़ पर लालटेन', 'घर का रास्ता', 'लेखक की रोटी', 'हम जो देखते हैं' आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। वे साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित हैं।

मदद लें...

सीमा - അതിർത്തി, border, ಗಡಿ, **எல்லை**

नुकसान हुआ - नष्ट हुआ

जला दिया - കത്തിച്ചു കളഞ്ഞു, burned, ಹೊತ್ತಿಸಿಬಿಡು, **எரிந்துவிட்டன**

मौत - मृत्यु

मजबूर होना - विवश होना

भागे हुए लोग - പലായനം ചെയ്തവർ, refugees, ಪಲಾಯನಗೈದವರು, **அகதிகள்**

लौटना - മടങ്ങുക, to return,ಹಿಂತಿರುಗುವುದು, **திரும்பி வருதல்**

उसी दौर की - അക്കാലത്തെ, at that time, ಆ ಕಾಲದಲ್ಲಿ , **அக்காலத்தில்**

बिछुड़ गए - अलग हुए

भले - अच्छे

देखभाल - സംരക്ഷണം, protection, ಸಂರಕ್ಷಣೆ, **பாதுகாப்பு**

भूल पाना - മറക്കാൻ സാധിക്കുക, able to forget, ಮರೆಯಲು ಸಾಧ್ಯವಾಗುವುದು, **மறக்க இயலுவது**

सनोबर (भोज) - പൈൻ മരം, pine tree, ಪೈನ್ ಮರ, **பைன் மரம்**

चमकीला - തിളങ്ങുന്ന, shining, ಹೊಳೆಯುವ ಲೂಲ್, **ஒளிருகின்ற**

खबर आई - समाचार आया

अभिभावक - रक्षक

माँगना - ആവശ്യപ്പെടുക, to demand, ಕೇಳಿಕೊಂಡರು, **கேட்டனர்**

भूखा रहना - വിശന്നിരിക്കുക, be hungry, ಹಸಿವಿನಿಂದಿರು **பசித்திருத்தல்**

खुरदुरे बिस्तर - പരുപരുത്ത കിടക്ക, coarse bed, ದೊರ ಗಾದ ಹಾಸಿಗೆ. **கரடு முரடான படுக்கை**

बचा - बाकी

मुसीबत - आपत्ति

के बावजूद - ऐसा होने पर भी

ज़िद - വാശി, stubbornness, ಹಟ, பிடிவாதம்

नींद उड़ गई - मन अशांत हुआ

तय किया - निश्चय किया

चुपके से - दूसरों की आँख बचाकर

इकट्ठा किए - एकत्र किए

उत्तर - വടക്ക്,north, ಉತ್ತರ, வடக்கு

पश्चिम - പടിഞ്ഞാറ്, west, ಪಶ್ಚಿಮ, மேற்கு

उम्मीद - विश्वास

बलूत - ഓക്ക് മരം, oak tree, ಓಕ್ ಮರ, ஓக்மரம்

टहनी - शाखा

चौराहा - നാൽക്കവല, junction, ಕವಲುದಾರಿ(ಜಂಕ್ಷನ್), சந்திப்பு

उड़ान भरते रहे - പറന്നുകൊണ്ടിരുന്നു, were flying, ಹಾರುತ್ತಿದ್ದವು, பறந்து கொண்டிருந்தது

जामुन - ഞാവൽപഴം, java plum, ನೇರಳೆ ಹಣ್ಣು, நாவல் பழம்

बेर - ഇലന്തപ്പഴം, Indian cherry plum, ಬೋರೆ ಹಣ್ಣು(ಎಲಚಿ ಹಣ್ಣು), இலந்தப் பழம்

झरना - അരുവി, stream, ತೊರೆ, அருவி

भटकने से - इधर-उधर घूमने से

थक गई - दुर्बल हो गई

बढ़ने लगी - വർദ്ധിക്കാൻ തുടങ്ങി, began to increase, ಹೆಚ್ಚಾಗಲಾರಂಭಿಸಿತು, அ திகரிக்கத் தொடங்கியது

छूट गया - अलग हो गया

हिम्मत बँधाई - साहस बढ़ाया

बिठाकर - बैठाकर

नाव खेता रहा - തോണി തുഴഞ്ഞുകൊണ്ടിരുന്നു, was rowing the boat, ದೋಣಿಗೆ ಹುಟ್ಟು ಹಾಕುತ್ತಿರು. படகை செலுத்திக்கொண்டே இருந்தனர்

इमारतें - കെട്ടിടങ്ങൾ, buildings, ಕಟ್ಟಡಗಳು, கட்டிடங்கள்

छील रही थी - തൊലി കളഞ്ഞുകൊണ്ടിരുന്നു, was peeling, ಸಿಪ್ಪೆ ತೆಗೆದುಕೊಂಡಿರು, **தோல் உரித்துக்கொண்டே இருந்தனர்**

गर्दन को बाँह में लिपटाया - ചേർത്ത് പിടിച്ചു, hold tightly, ಭುಜದ ಮೇಲೆಕೈ ಹಾಕಿ ಹತ್ತಿರ ಹಿಡಿದು, **தோளில் கை வைத்து அணைத்துப்பிடித்து**

तलाश - अन्वेषण

निशानी - चिह्न

सफ़र - यात्रा

जारी रखा - തുടർന്നു, continued, ಮುಂದುವರಿಯಿತು, **தொடர்ந்தது**

आँसू - കണ്ണുനീർ, tears, ಕಣ್ಣೀರು, **கண்ணீர்**

खलिहान - കളപ്പുര, barn, ಉಗ್ರಾಣ, **தானியக்களஞ்சியம்**

मवेशी - കന്നുകാലികൾ, cattle, ಜಾನುವಾರು, **கால் நடைகள்**

झाँक रहे हैं - എത്തിനോക്കിക്കൊണ്ടിരിക്കുന്നു, peer over, ಇಣುಕಿ ನೋಡುವುದು, **எட்டிப்பார்த்தல்**

गले लगा लिया - आलिंगन किया

पहचान गए - തിരിച്ചറിഞ്ഞു, identified, ಗುರುತಿಸು, **அடை யாளம் காணுதல்**

आँखें छलकना - കണ്ണുകൾ തുളുമ്പുക, tears ran down, ಕಣ್ಣಾಲಿಗಳು ತುಂಬಿ ಬರುವುದು, **கண்ணீர் ததும்புதல்**

गाल - കവിൾത്തടം, cheek, ಕೆನ್ನೆ **கன்னத்தில்**

चूमा - ചുംബിച്ചു, kissed, ಮುತ್ತಿಕ್ಕಿದರು, **முத்தமிட்டனர்**

मिठास - മാധുര്യം, sweetness, ಮಧುರವಾಗಿ, **இனிமையாக**

पत्तियाँ - ചെറിയ ഇലകൾ, small leaves, ಎಲೆಗಳು, **சிறியஇலைகள்**

भटकन - അലഞ്ഞുതിരിയൽ, wandering, ಅಲೆದಾಡಿಕೊಂಡು, **அலைந்து திரிந்து**

खत्म हो गई - समाप्त हो गई

कविता

कब तक?

वंदना टेटे

कब तक जोहते रहोगे
अपनी पहचान जानने
के लिए दूसरे का मुँह
और कब तक आसरे में
रहोगे कि कोई आए
और तुम्हारे लिए लड़े।
कब तक खुश होते रहोगे
कि उनकी कहानी में
तुम्हारा जिक्र है
कि तुम्हारा इतिहास
तुमने नहीं उसने लिखा है।

'अपनी पहचान जानने के लिए दूसरे का मुँह जोहते रहना'—इससे आपने क्या समझा?

'कि तुम्हारा इतिहास / तुमने नहीं उसने लिखा है'— इसमें किस बात की ओर संकेत है?

कब तक जोहते रहोगे
अवतारों के आगमन की बाट
कि हो सके
तुम्हारा उद्धार
क्यों करेगा कोई तुम्हारी
व्यथा का निराकरण
अपनी व्यथा बढ़ाने के लिए।
इसलिए बदलो
कि
समय बदल चुका है
नहीं देता अब कोई
अपना निवाला
नहीं देता अपना गाल
और नहीं रखता कोई
अपने सर पर जूती।
कि आत्म-सम्मान से
बड़ी कोई चीज़ नहीं होती।

'कि आत्म-सम्मान से / बड़ी कोई चीज़ नहीं होती' —इन पंक्तियों पर अपना विचार प्रकट करें।

समान आशयवाली पंक्तियाँ चुनकर लिखें :

- अपना परिचय जानने के लिए दूसरों का इंतज़ार नहीं करो।
- ऐसी आशा छोड़ दो कि तुम्हारे लिए संघर्ष करने कोई आएगा।
- कोई भी तुम्हारा दुख दूर करने को तैयार नहीं होगा जिससे उसके दुख की वृद्धि हो।

कविता पर चर्चा करें और ऐसे महापुरुषों के नाम जोड़ें जिन्होंने समाज के उत्थान के लिए अपनी ज़िंदगी का समर्पण किया है :

- श्रीमती अक्काम्मा चेरियान
- श्रीनारायण गुरु
- महात्मा अय्यंकाली
- वक्कम अब्दुल खादर मौलवी

कविता में 'कोई' शब्द का प्रयोग बार-बार हुआ है। यह किसको सूचित करता है?

प्रयोग की विशेषता पहचानें :

- मुँह जोहना
- बाट जोहना

कविता का आशय लिखें :

वंदना टेटे

जन्म : 13 सितंबर 1969

वंदना टेटे का जन्म झारखंड के सिमडेगा जिले के सामटोली में हुआ। हिंदी और खड़िया में लिखे इनके लेख, कविताएँ और कहानियाँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं। 'किसका राज है', 'आदिवासी साहित्य : परंपरा और प्रयोजन', 'आदिम राग', 'कोनजोगा' आदि उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं।

'कामयाबी की राह पर' इकाई से गुज़रने पर आपने क्या-क्या समझा :

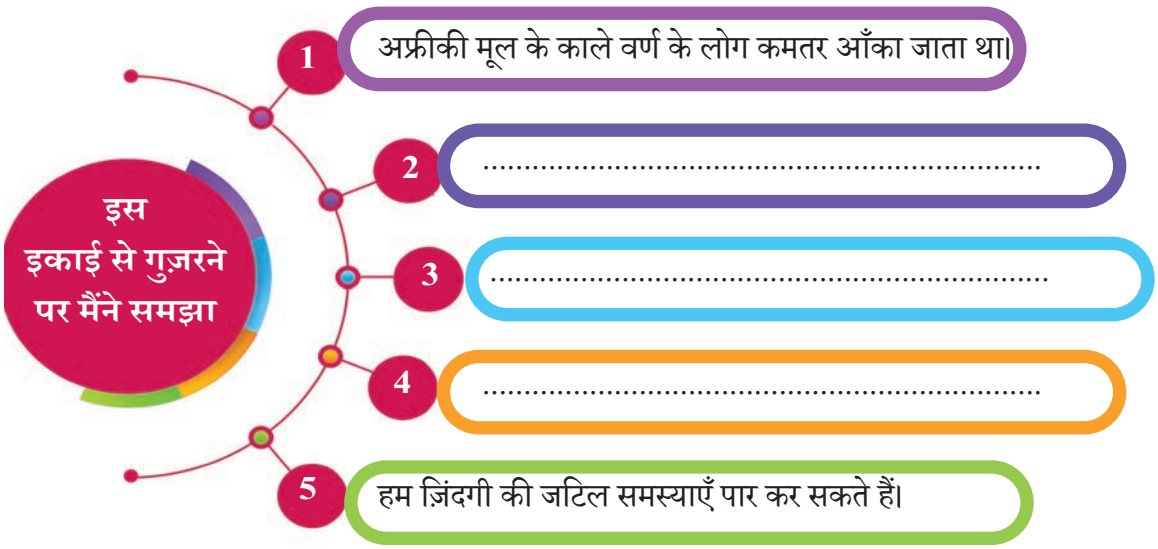

मदद लें...

मुँह जोहना	-	प्रतीक्षा करना
पहचान	-	തിരിച്ചറിവ്, identity, ಗುರುತು, அடையாளம்
आसरा	-	आश्रय
लड़ना	-	संघर्ष करना
ज़िक्र	-	उल्लेख
उद्धार	-	ഉയർത്തൽ, up lift, ಏರಿಸುವುದು, உயர்த்துதல்
निराकरण करना	-	दूर करना
निवाला	-	ചോറുരുള, a ball of cooked rice, ಅಕ್ಕಿ ರೊಲ್, துண்டு
आत्म-सम्मान	-	स्वाभिमान

कब तक ?

इकाई - 5

खुला आसमान

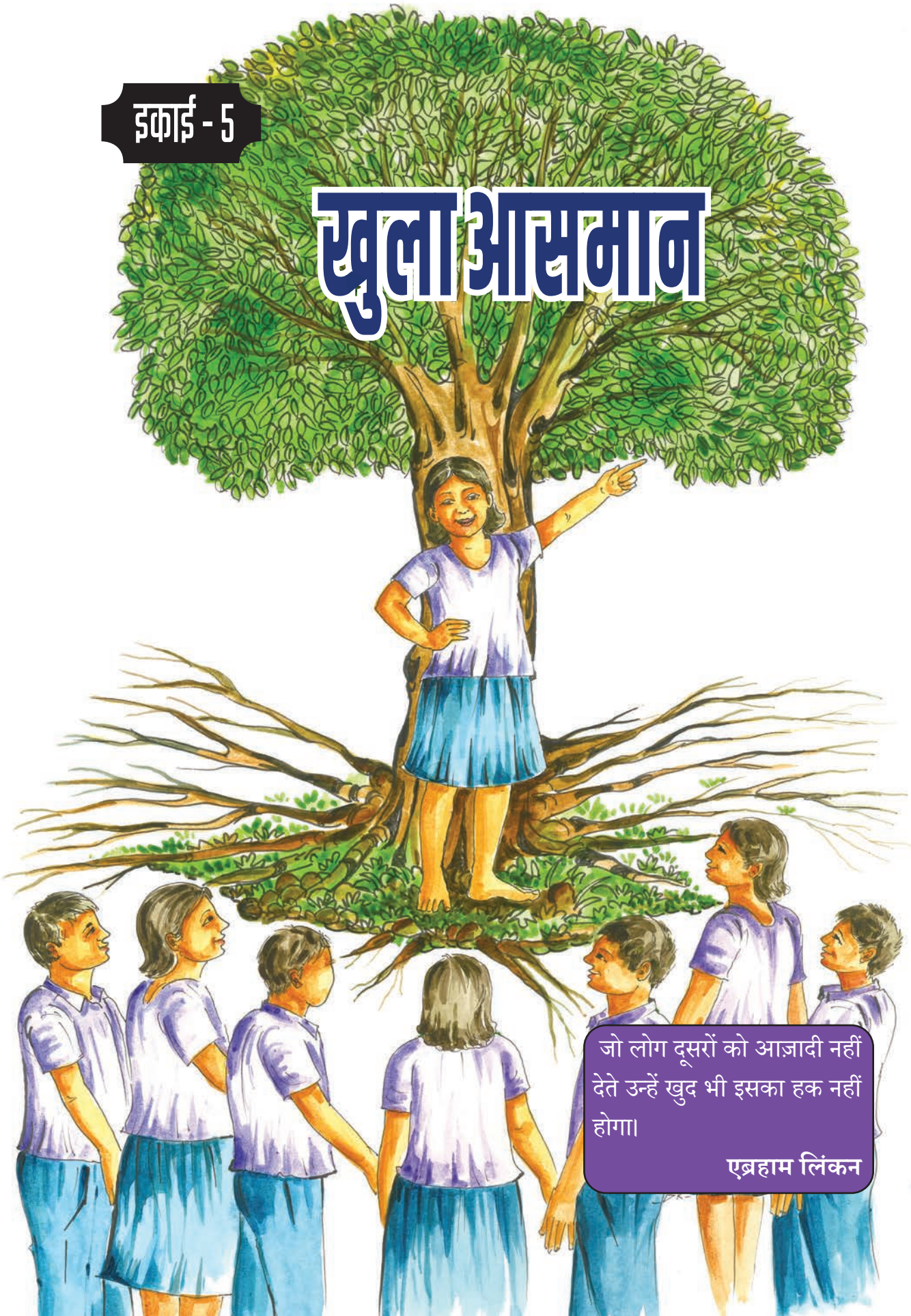

जो लोग दूसरों को आज़ादी नहीं देते उन्हें खुद भी इसका हक नहीं होगा।

एब्रहाम लिंकन

देखें, बच्चे क्या करते हैं :

चलें, हम भी खेलें।

नाटक

राजा और विद्रोही

रबींद्रनाथ ठाकुर
अमर गोस्वामी (अनुवादक)

पात्र

- राजेन (राजा)
- जितेन (मंत्री)
- उपेन (न्यायाधीश)
- हेम (विद्रोही)
- सेनापति
- सैनिक
- कुछ जनता
- मति

(पहला दृश्य)

राजेन : मैं तुम लोगों का राजा हूँ।

हेम : तुम राजा! मगर क्यों?

राजेन : क्योंकि मैं तुम सबसे बड़ा हूँ।

हेम : मगर सिर्फ इसी बात से साबित नहीं होता कि तुम सबसे बलवान भी हो।

सबसे बलवान राजा बनेगा। इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं?

राजेन : क्या मेरी ताकत सबसे ज्यादा नहीं है? चलो, लड़ लें।

हेम : ठीक है।

राजेन : मैं तुम्हारा जबड़ा तोड़ दूँगा।

हेम : तुम्हारी नाक का भुर्ता बना दूँगा।

राजेन : तुम्हारी बत्तीसी तोड़ दूँगा।

(मति का प्रवेश)

मति : अरे, यह क्या! तुम लोग इस तरह झगड़ा क्यों कर रहे हो?

हेम : राजेन कहता है वह राजा बनेगा। वह खुद को सबसे बलवान मानता है। मगर मैं ऐसा नहीं समझता।

मति : यह सिर्फ़ खेल है। राजेन के राजा बनने में हर्ज क्या है? बाद में तुम्हारी भी राजा बनने की बारी आएगी। जय महाराज राजेंद्र की जय। अब बताइए, आप मंत्री किसे बना रहे हैं?

"यह सिर्फ़ खेल है। राजेन के राजा बनने में हर्ज क्या है? बाद में तुम्हारी भी राजा बनने की बारी आएगी।" -इस कथन से बच्चों के खेल की कौन-सी विशेषता प्रकट होती है?

राजेन : जितेन को मैं अपना मंत्री बनाऊँगा।

मति : और सेनापति?

राजेन : तुम बनोगे?

मति : और न्यायाधीश कौन बनेगा?

राजेन : इसके लिए अपना उपेन है।

मति : और बाकी बचे लड़के?

राजेन : वे सभी सैनिक बनेंगे।

मति : ठीक है, खेल शुरू हो। सैनिक लोग, तुम सब कतार में खड़े हो जाओ। महाराज को सलाम करो। कहो महाराज राजेंद्र की जय हो।

(दूसरा दृश्य)

राजा : सेनापति, तुमसे मैं काफ़ी नाराज़ हूँ।

सेनापति : ऐसी क्या गलती हुई महाराज?

राजा : तुममें किसी बात का जोश नहीं रहा।

सेनापति : आज्ञा दीजिए महाराज! मेरे लिए आपकी इच्छा ही सब कुछ है।

राजा : सेनापति बनने के बाद से अभी तक तुमने किसी लड़ाई की तैयारी नहीं की है।

सेनापति : महाराज किससे लड़ें? कोई दुश्मन तो है ही नहीं।

राजा : दुश्मन नहीं है? तो फिर दुश्मन बनाओ। तुम्हें खजाने से अच्छे खासे पैसे मिलते हैं और तुम्हारे सैनिक खाली बैठे-बैठे उकता रहे हैं। अगर बाहरी दुश्मन उन्हें न मिले तो किसी दिन वे मुझपर ही हमला करने आ जाएँगे। सैनिको!

एक सैनिक : आज्ञा दीजिए महाराज।

राजा : अगर तुम्हें लड़ाई करनी पड़े तो कैसा लगेगा?

बाकी सैनिक : लड़ाई! फिर तो बड़ा मज़ा आएगा।

राजा : ठीक कहा, मज़े की बात ही है। सेनापति!

सेनापति : आदेश दीजिए, महाराज!

राजा : कोई दुश्मन ढूँढ़ निकालो। उसके बाद ही लड़ाई शुरू होगी।

(राजा का प्रस्थान। हेम और जनता का प्रवेश)

सेनापति : साथियो, क्या तुममें से कोई ऐसा है जो महाराज से लड़ने के लिए राजी हो?

जनता : जी नहीं!

सेनापति : क्या एक भी नहीं?

जनता : हम किसीसे डरते नहीं। लेकिन हम महाराज से लड़ना नहीं चाहते!

''हम किसीसे डरते नहीं। लेकिन हम महाराज से लड़ना नहीं चाहते।'' यहाँ जनता के किस मनोभाव का परिचय मिलता है?

सेनापति : मगर हेम, तुमने महाराज का अपमान किया है। तो फिर तुम्हारे साथ ही लड़ाई हो।

हेम : मगर मैंने किस तरह महाराज का अपमान किया?

सेनापति : हमारे महाराज जब तुम्हारे मकान के सामने से गुज़र रहे थे, उस वक्त तुम खिड़की के पास खड़े होकर जंभाई ले रहे थे।

तीनों सैनिक : जंभाई ले रहा था। हा हा हा!!!

जनता : जंभाई लेना तो भयंकर बात है। इतना साहस? इससे बड़ा अपमान और क्या होगा?

हेम : मगर राजा बनने के बाद तो महाराज एक बार भी हमारे घर के सामने से नहीं गुज़रे हैं।

सेनापति : मगर भैया, क्या तुम दिल पर हाथ रखकर कह सकते हो कि तुमने कभी जंभाई नहीं ली।

हेम : तो मुझे मान ही लेना पड़ेगा कि मैंने ज़रूर कभी जंभाई ली होगी।

सेनापति : शाबाश! अब तुमने बहादुरों की जैसी बात कही।

जनता : इसे कहते हैं राजा का एकदम योग्य शत्रु। ठीक है न?

सभी सैनिक: तुमसे लड़ाई करके ज़रूर मज़ा आएगा।

सेनापति : चलो सैनिको! इस महान युद्ध के लिए तैयार हो।

जनता : जय राजाधिराज राजेंद्र की जय।

(तीसरा दृश्य)

(सेनापति का प्रस्थान । न्यायाधीश का प्रवेश)

जनता : माननीय न्यायाधीश महोदय! हम लोग जानना चाहते हैं कि हेम के साथ महाराज की यह जो लड़ाई हो रही है वह कहाँ तक उचित है?

न्यायाधीश : अरे ज़रा इसकी बात सुनो। वे तो राजा हैं।

जनता : इसीलिए तो वे न्यायधर्म के पालनहार होंगे।

न्यायाधीश : न्याय-अन्याय तो राजा ही जानते हैं। हम लोग क्या कर सकते हैं?

जनता : हम समझते हैं कि जब तक महाराज न्याय की राह पर चलेंगे तब तक वे हम लोगों के राजा बने रहेंगे।

न्यायाधीश : लेकिन राजा की इच्छा के सामने हमें सिर झुकाना ही पड़ेगा।

जनता : अगर वह इच्छा अन्याय हो, अधर्म हो तब भी?

न्यायाधीश : हाँ तब भी।

जनता : क्यों?

न्यायाधीश : बड़े आश्चर्य की बात है। जानते नहीं कि महाराज के पास काफी बड़ी फ़ौज की ताकत है?

जनता : महाराज को अदालत में बुलाने का आदेश दीजिए।

न्यायाधीश : महाराज को अदालत में बुलाना पड़ेगा?

जनता : अगर आप न्यायाधीश का कर्तव्यपालन नहीं कर सकते तो फिर आपका कोई फ़ैसला हम नहीं मानेंगे।

न्यायाधीश : तुम सबकी बातें न्याय संगत हैं। महाराज को बुलवा भेजने की अब जरूरत नहीं। वे खुद ही इधर आ रहे हैं।

(राजा का प्रवेश)

राजा : यहाँ भीड़ क्यों लगी है? तुम लोगों को क्या चाहिए?

जनता : हमें न्याय चाहिए महाराज।

राजा : इसके लिए अदालत है। वहाँ जाने पर न्याय के लिए सोचना नहीं पड़ेगा।

जनता : माननीय न्यायाधीश से जानने आए हैं कि हेम के विरुद्ध महाराज की लड़ाई क्या उचित है?

राजा : उचित? राजा कभी अन्याय नहीं कर सकते।

जनता : राजा जब अन्याय करते हैं, फिर वे राजा नहीं रहते।

राजा : तुम लोग कड़ी बातें कह रहे हो। इसका परिणाम सोच लो।

जनता : राजा कभी अन्याय नहीं करते, इस बात का मतलब आप भी सोच लीजिए, महाराज हम सविनय जानना चाहते हैं कि हेम का अपराध क्या है?

राजा : इसको तो मैं ठीक-ठीक से बता नहीं सकता। जहाँ तक मुझे याद है कि एक दिन राजमहल का हाथी जब घूमने निकला था, ठीक उसी वक्त हेम ने उसके सामने थूक दिया था। इसे सभी ने देखा है।

जनता : राजा के कानून में अगर दंड देने लायक हो तो अदालत में हेम पर मुकदमा क्यों न चलाया जाए।

राजा : यानि कि लड़ाई के आनंद और उल्लास से तुम लोग मुझे अलग करना चाहते हो।

'यानि कि लड़ाई के आनंद और उल्लास से तुम लोग मुझे अलग करना चाहते हो?" -लड़ाई से आनंद और उल्लास का अनुभव करने वाले राजा पर आपका विचार क्या है?

जनता : इसीलिए कि लड़ाई अन्याय है।

राजा : लेकिन हमें इसकी बेहद ज़रूरत है।

जनता : जरूरत! क्यों?

राजा : खाली बैठे-बैठे हमारे सैनिक लड़ना भूलते जा रहे हैं।

जनता : तब तो हम लोग हेम की तरफ हैं। चलो भाई, चलकर हेम के हाथ मज़बूत करें।

(सब जाते हैं)

(सेनापति का प्रवेश)

राजा : तुम परेशान नज़र आ रहे हो।

सेनापति : जी महाराज, सारी बातें सुनने पर आप भी परेशान हो जाएँगे।

राजा : ऐसी क्या बात है?

सेनापति : जिस कारण से यह लड़ाई लड़ी जानी है, वे उसे ठीक नहीं समझते।

राजा : इससे तो यही साबित होता है कि लड़ाई के कारण का प्रचार करने में तुमने ध्यान नहीं दिया था।

सेनापति : उधर लड़ाई चल रही है। सबसे पहले मुझे वहाँ पहुँचना होगा।

राजा : ऐसा ही करो। पर याद रखना, विद्रोहियों को माफ़ नहीं किया जाएगा।

(एक सैनिक का प्रवेश)

सैनिक : सेनापति जी, हम लोग हार गए।

सेनापति : हार गए? क्या कहते हो? अभी तो लड़ाई शुरू ही हुई थी।

सैनिक : हमारे लोग बड़ी संख्या में भाग रहे हैं।

राजा : जाओ, जाकर उनसे कहो जो भागेगा नहीं उसे इनाम दिया जाएगा। उसका राजकीय सम्मान होगा।

(सैनिकों के साथ हेम का प्रवेश)

हेम : आप बंदी हैं।

राजा : सावधान हेम! यह मत भूलो कि मैं राजा हूँ।

हेम : राजा का अधिकार आपने खो दिया है। जनता के दरबार में आप अपराधी हैं। उन्हींके फैसले का पालन करने आया हूँ।

राजा : अपने जिंदा रहते मैं ऐसा नहीं होने दूँगा।

(जनता का प्रवेश)

जनता : पापी राजा का नाश हो।

राजा : सेनापति, तुम्हारे सामने ऐसा अत्याचार! तुम्हारी, महाराज का इस तरह अपमान करने की हिम्मत!

सेनापति : आज मेरे पास कोई अधिकार नहीं है महाराज!

राजा : न्यायाधीश! ऐसे बदमाशों को तुम सज़ा क्यों नहीं देते?

न्यायाधीश : इसलिए कि न्याय इन्हींके हाथ में है। और इनके साथ पूरी सेना भी है। आप भी अब खामोश

रहिए। राजमुकुट उतार दीजिए। जनता की भीड़ में मिल जाइए।

'जनता की भीड़ में मिल जाना' -इसका मतलब क्या है?

राजा : तो लड़ाई खतम हो गई? मगर इससे क्या हुआ? अदालत तो है ही। वहाँ तो मैं अपनी बात रख सकता हूँ। मेरी राजसभा के चारण अदालत में मेरी ओर से ऐसा भाषण देंगे कि मेरी नीति ही ठीक है।

न्यायाधीश : राजचारण की चापलूसी सुन-सुनकर जनता के कान झनझना रहे हैं।

राजा : मुझे पता है, नमक का गुण वह गाएगा ही। समय आते ही मैं राजचारण को पुरस्कृत करूँगा।

न्यायाधीश : राजचारण ने कहा है कि सिर्फ मुकुट छीन लेने से ही नहीं चलेगा।

राजा : यह क्या कहते हो? तब तो सचमुच मेरे सामने खतरा है। मैं अपने दरबारी कवि की राय जानना चाहता हूँ।

न्यायाधीश : दरबारी कवि अब विजयी जनता की गौरव गाथा लिख रहा है।

राजा : तो आओ मित्र हेम, तुम्हें बधाई! धन्य तुम्हारा साहस। जाने के पहले तुम्हें दो एक सलाह देना चाहता हूँ। तुम राजचारण के पद को खतम कर देना। अब मैं विदा लेता हूँ साथियो!

लड़ाई के बिना ही राजा ने अपना अधिकार जनता को सौंप दिया। यह कैसे संभव हो पाया?

संबंध पहचानें और मिलान करके लिखें :

क्या कहा?	किसने कहा?	इससे क्या समझा
• राजा की इच्छा के सामने हमें सिर झुकाना ही पड़ेगा।	हेम	• न्याय दिलाने में असमर्थ व्यवस्था को चुनौती।
• लड़ाई के आनंद और उल्लास से तुम लोग मुझे अलग करना चाहते हो।	सेनापति	• युद्ध में भी आनंद का अनुभव करने वाला शासकमन।
• अगर आप न्यायाधीश का कर्तव्यपालन नहीं कर सकते तो फिर आपका कोई फ़ैसला हम नहीं मानेंगे।	राजा	• आदेशों का अंधा अनुसरण।
• मगर राजा बनने के बाद तो महाराज एक बार भी हमारे घर के सामने से नहीं गुज़रे हैं।	जनता	• अधिकारी के प्रति वफ़ादारी।
• आज्ञा दीजिए महाराज! मेरे लिए आपकी इच्छा ही सब कुछ है।	न्यायाधीश	• शासन के प्रति जनता की आलोचना।

रेखांकित पदबंध पर ध्यान दें। पदबंधों का अर्थ पहचानें :

न्यायाधीश : राजचारण की चापलूसी सुन-सुनकर जनता के **कान झनझना रहे** हैं।

यह संवाद पढ़ें और छूटे परसर्ग पहचानें :

न्यायाधीश — राजचारण चापलूसी सुन-सुनकर जनता के कान झनझना रहे हैं।

राजा — मुझे पता है, नमक गुण वह गाएगा ही।

कोष्ठक से उचित परसर्ग चुनकर रिक्त स्थान भरें : (का, के, की)

- नाटक ..... पात्र मंच पर आते हैं।
- राजा ..... वेश-भूषा सुंदर थी।
- बच्चों ..... नाटक जोशीला था।

टिप्पणी लिखें :

'राजा और विद्रोही' नाटक का राजा आपको कैसे लगा? राजा की चरित्रगत विशेषताओं का परिचय देते हुए टिप्पणी लिखें।

चलो, हम 'राजा और विद्रोही' नाटक का मंचन करें :

मंचन के पूर्व ये तैयारियाँ करें :

- दल का गठन करें।
- निर्देशक को चुनें।
- पात्रों का चयन करें।
- आवश्यक सामग्रियों की सूची बनाएँ।
- पात्रों की वेश-भूषा निश्चित करें।
- पात्रों के चाल-चलन के निर्देश तैयार करें।
- संवाद की योजना बनाएँ।
- मंच की रूपरेखा तैयार करें।

रबींद्रनाथ ठाकुर

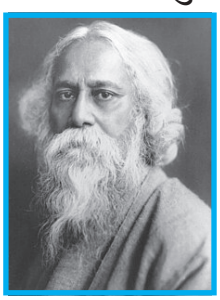

जन्म : 07 मई 1861

मृत्यु : 07 अगस्त 1941

रबींद्रनाथ ठाकुर का जन्म कोलकत्ता में हुआ। बचपन से ही कविता, छंद और भाषा में उनकी अद्‌भुत प्रतिभा का आभास लोगों को मिलने लगा था। टैगोर ने अपने जीवनकाल में कई उपन्यास, निबंध, लघु कथाएँ, यात्रावृत्त, नाटक और सहस्रों गाने भी लिखे हैं। गीतांजलि उनकी बहुचर्चित रचना है।

अमर गोस्वामी

जन्म : 28 नवंबर 1945

मृत्यु : 28 जून 2012

अमर गोस्वामी हिंदी के प्रसिद्‌ध साहित्यकार तथा उपन्यासकार हैं। वे 'मनोरमा' और 'गंगा' जैसी देश की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं से लंबे समय तक जुड़े रहे थे। अमर गोस्वामी साहित्यिक संस्था 'वैचारिकी' के संस्थापक थे। उन्होंने कई साहित्यिक पत्रिकाओं का संपादन भी किया।

मदद लें...

विद्रोही	-	क्रांतिकारी
साबित होना	-	തെളിയിക്കപ്പെടുക, to be proven, ಸಾಬೀತಾಯಿತು, நிரூ பிக்கப்படுதல்
जबड़ा	-	താടിയെല്ല്, jaw, ದವಡೆ, தாடை எலும்பு
भुर्ता बनाना	-	(मार-मार कर) कचूमर निकालना, अत्यधिक मारना
बत्तीसी तोड़ देना	-	മുപ്പത്തി രണ്ട് പല്ലും അടിച്ചുകൊഴിക്കുക, knock out all teeth, ಮೂವತ್ತೆರಡು ಹಲುಗ್ಲಳನ್ನು ಉದುರಿಸು, முப்பத்தி இரண்டு பற்களையும் அடித்து கீழே போடுவேன்
झगड़ा	-	कलह
हर्ज़	-	आपत्ति
बारी	-	अवसर
न्यायाधीश	-	जज
कतार	-	पंक्ति
खाली बैठना	-	बेकार बैठना
उकताना	-	ऊबना
आज्ञा	-	आदेश
जंभाई	-	കോട്ടുവായ, **yawn,** ಆಕಳಿಸು, கொட்டாவி
दिल पर हाथ रखकर कहना	-	ईमानदारी से कहना
बहादुर	-	वीर
फ़ौज	-	सेना

अदालत - न्यायालय

पालनहार - संरक्षक

थूक देना - തുപ്പുക, to spit out, ಉಗುಳುವುದು, துப்புதல்

दंड देने लायक - सज़ा देने योग्य

मुकदमा - കേസ്, case, வழக்கு

बेहद ज़रूरत - अत्यंत आवश्यकता

हाथ मज़बूत करना - शक्ति प्रदान करना

सावधान - सतर्क

फ़ैसले का पालन - निर्णय का अनुसरण

जनता की भीड़ - जनसमुदाय

राजचारण - राजा की बढ़ा-चढ़ाकर प्रशंसा करनेवाला

चापलूसी - झूठी प्रशंसा

कान झनझनाना - चैन खो जाना

नमक का गुण गाना - ഉണ്ട ചോറിന് നന്ദി കാണിക്കുക, to be grateful, ಉಂಡ ಅನ್ನಕ್ಕೆ ಕೃತಜ್ಞತೆತೋರಿಸು, உப்பிட்டவரை உள்ளளவும் நினை

छीन लेना - अपहरण करना

खतरा - आपदा

खत्म कर देना - समाप्त कर देना

विदा लेना - വിടവാങ്ങുക, say goodbye, ವಿದಾಯ ಹೇಳು, விடைபெறுதல்

कविता

बोनज़ाई

सुधा उपाध्याय

तुमने आँगन से खोदकर
मुझे लगा दिया सुंदर गमले में
फिर सजा लिया घर के ड्राइंग रूम में
हर आने जाने वाला बड़ी हसरत से देखता है
और धीरे-धीरे मैं बोनज़ाई में तब्दील हो गई

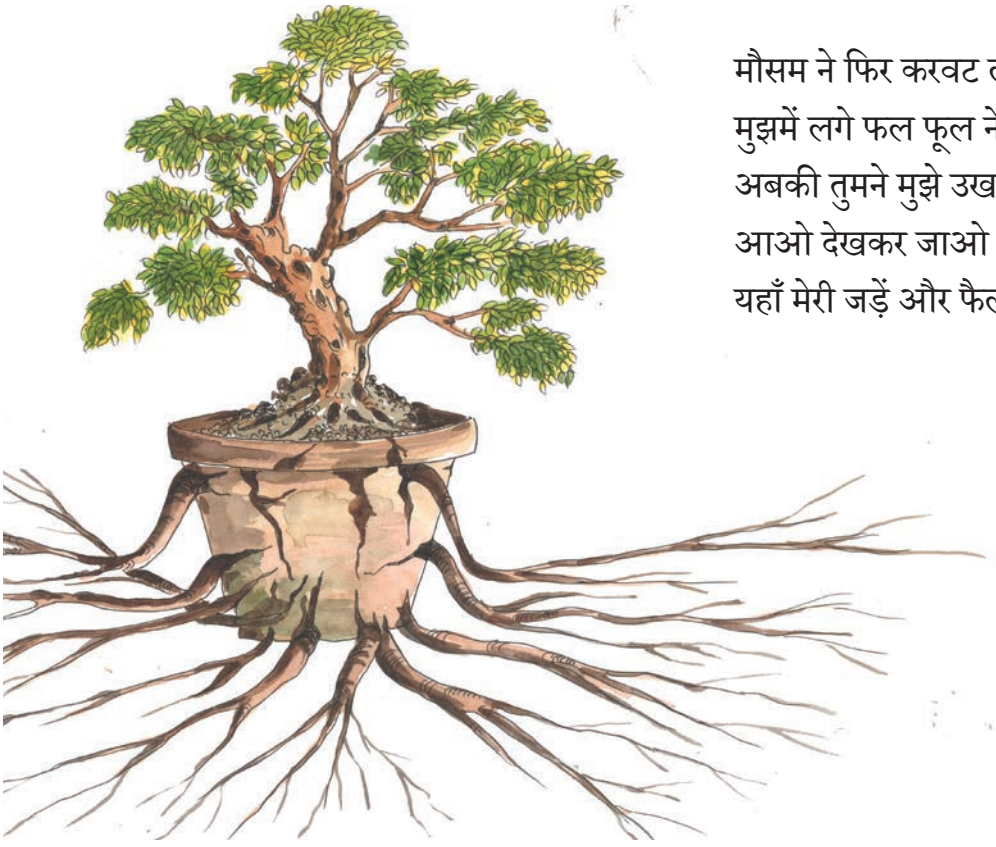

मौसम ने फिर करवट ली
मुझमें लगे फल फूल ने तुम्हें फिर डराया
अबकी तुमने मुझे उखाड़ फेंका घूरे पर
आओ देखकर जाओ
यहाँ मेरी जड़ें और फैल गई हैं।

कविता पढ़ते समय इन प्रश्नों से गुज़रें :

- आंगन से खोदकर गमले में लगा देने से पौधे में क्या-क्या परिवर्तन हो सकते हैं?
- ड्राइंग रूम में बोनज़ाई को अतिथि लोग आश्चर्य से क्यों देखते होंगे ?
- 'धीरे-धीरे मैं बोनज़ाई में तब्दील हो गई'-इससे आपने क्या समझा?
- 'मुझमें लगे फल फूल ने तुम्हें फिर डराया'- इससे आपको क्या आशय मिलता है ?
- बोनज़ाई में फल फूल लगने पर मालिक ने उसे घूरे पर क्यों फेंक दिया ?
- 'घूरे पर बोनज़ाई की जड़ें और फैल गई' का मतलब क्या है ?
- कविता से विशेष अर्थ को सूचित करने वाले शब्दों को पहचानें।

  जैसे : बोनज़ाई, आँगन

पृष्ठ 92 का चित्र ध्यान से देखें, नीचे दिए प्रश्नों पर विचार करें :

- बोनज़ाई किन-किन के प्रतीक हो सकते हैं?
- क्या, बोनज़ाई किसी विशेष अर्थ की सूचना देता है?

आस्वादन टिप्पणी लिखें :

बोनज़ाई कविता की रूपपरक और आशयपरक विशेषताओं का परिचय देते हुए आस्वादन टिप्पणी लिखें।

कक्षा के कविता पाठ कार्यक्रम में भाग लें।

कविता पाठ का वीडियो बनाएँ।

सुधा उपाध्याय

जन्म : 29 नवंबर 1972

सुधा उपाध्याय हिंदी की आज की लेखिकाओं में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। उनका जन्म उत्तरप्रदेश में हुआ। इसलिए कहूँगी मैं, बोलती चुप्पी, पाठ-पुनर्पाठ, 'औपन्यासिक चरित्रों में वर्चस्व की राजनीति :छठवें दशक के बाद' आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। शीला सिद्धांतकर सम्मान, अमर सरस्वती सम्मान, साहित्य गौरव सम्मान, मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार आदि से वे सम्मानित हैं।

मदद लें...

खोदना	- കിളച്ചെടുക്കുക, to dig and pull out, ಅಗೆದು ತೆಗೆಯುವುದು, கிளறிவிடுதல்
गमला	- പൂച്ചട്ടി, flowerpot, ಮಣ್ಣಿನ ಮಡಕೆ, மண்சட்டி
सजा लिया	- अलंकृत किया
ड्राइंग रूम	- സ്വീകരണ മുറി, drawing room, ಸ್ವಾಗತ ಕೊಠಡಿ, வரவேற்பறை
बड़ी हसरत से	- लालसा के साथ
तब्दील हो जाना	- पूरी तरह बदल जाना
करवट लेना	- बदल जाना
अबकी	- इस वक्त
उखाड़ फेंकना	- പിഴുതെറിയുക, pull out and throw away, ಕಿತ್ತು ಬಿಸಾಡುವುದು, பிடுங்கி எறிதல்
घूरे पर	- कूड़े-कचरे में

भारत का संविधान

भाग 4 क

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य-

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे,

ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे,

ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और अक्षुण्ण बनाए रखे,

घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे,

ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेद-भावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे, जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों,

च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उनका परिरक्षण करे,

छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्यजीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे,

ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे,

झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे,

ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके, और

ट) छह और चौदह साल के बीच के अपने बच्चे/बच्ची को या अपने संरक्षण में रहनेवाले बच्चे / बच्ची को उसके माता-पिता या अभिभावक तदनुकूल शिक्षा प्रदान करने का अवसर दें।

बच्चों के हक

प्यारे बच्चो,

क्या आप जानना चाहेंगे कि आपके क्या-क्या हक हैं? अधिकारों का ज्ञान आपको सहभागिता, संरक्षण, सामाजिक नीति आदि सुनिश्चित करने की प्रेरणा तथा प्रोत्साहन देगा। आपके अधिकारों के संरक्षण के लिए अब एक आयोग हैं– 'केरल राज्य बालाधिकार संरक्षण आयोग'। देखें, आपके क्या-क्या हक हैं–

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हक
व्यक्तिगत स्वतंत्रता के साथ जीने का हक
उत्तर जीवन एवं सर्वांगीण विकास का हक
धर्म, जाति, वर्ग एवं वर्ण की संकीर्णता के परे आदर पाने एवं मान्यता प्राप्त करने का हक
मानसिक, शारीरिक एवं लिंगपरक अतिक्रमण से परिरक्षण पाने का हक
भागीदारी का हक
बालश्रम से एवं खतरनाक पेशों से मुक्ति का हक
बाल विवाह से परिरक्षण पाने का हक
अपनी संस्कृति जानने एवं तदनुरूप जीने का हक
उपेक्षाओं से परिरक्षण पाने का हक
मुफ़्त तथा ज़बरदस्त शिक्षा पाने का हक
खेलने तथा पढ़ने का हक
सुरक्षित एवं प्रेमयुक्त परिवार तथा समाज में जीने का हक

कुछ दायित्व

स्कूल एवं सार्वजनिक संस्थाओं का परिरक्षण करना।

स्कूल एवं शैक्षिक प्रक्रियाओं में समय की पाबंदी रखना।

अपने माता-पिता, अध्यापक, स्कूल के अधिकारी तथा मित्रों का आदर करना और उन्हें मानना।

जाति-धर्म-वर्ग-वर्ण की संकीर्णताओं के परे दूसरों का आदर एवं सम्मान करना।

Contact Address:
Kerala State Commission for Protection of Child Rights
'Sree Ganesh', T. C. 14/2036, Vanross Junction
Kerala University P. O., Thiruvananthapuram - 34, Phone: 0471-2326603
Email: childrights.cpcr@kerala.gov.in, rte.cpcr@kerala.gov.in
Website: www.kescpcr.kerala.gov.in

Child Helpline - 1098, Crime Stopper - 1090, Nirbhaya - 1800 425 1400
Kerala Police Helpline - 0471-3243000/44000/45000

Online R. T. E Monitoring : www.nireekshana.org.in